स्थानीय संस्थान पुस्तिका

shepherds
GLOBAL CLASSROOM

Shepherds Global Classroom का अस्तित्व इस पूरे संसार में उभरते हुए मसीही अगुवों के लिए एक पाठ्यक्रम प्रदान करके यीशु मसीह की देह को तैयार करने के लिए है। हमारा लक्ष्य संसार के हर देश में आत्मिक प्रशिक्षकों के हाथों में 20-पाठ्यक्रम पाठ्यक्रम उपकरण को देकर स्वदेशी प्रशिक्षण कार्यक्रमों की संख्या को बढ़ाना है।

यह पुस्तक https://www.shepherdsglobal.org/courses से निःशुल्क डाउनलोड के लिए उपलब्ध है।

मुख्य लेखक: Dr. Stephen K. Gibson डॉ. स्टीफन के. गिब्सन

कॉपीराइट© 2022 Shepherds Global Classroom
तीसरे अंग्रेज़ी संस्करण से हिन्दी भाषा में अनुवादित

सर्वाधिकार सुरक्षित।

तृतीय-पक्ष पाठ्यसामग्री पर उनके सम्बन्धित प्रकाशकों का कॉपीराइट है और उन्हें विभिन्न लाइसेंसों के अन्तर्गत साझा किया गया है।

जब तक संकेत न दिया जाए, सभी पवित्रशास्त्र के उद्धरण HINDI OV (RE-EDITED) बाइबल से लिए गए हैं। कॉपीराइट ©2012 द बाइबल सोसायटी ऑफ इंडिया। इन्हें अनुमति के साथ प्रयोग किया गया है। पूरे विश्व में सर्वाधिकार सुरक्षित।

अनुमति सूचना:

इस पुस्तक को निम्नलिखित दिशानिर्देशों के अन्तर्गत प्रिंट और डिजिटल प्रारूप में स्वतंत्रपूर्वक छापा और वितरित किया जा सकता है: (1) पुस्तक की सामग्री में किसी भी तरह से बदलाव नहीं किया जाना चाहिए; (2) इसकी प्रतियाँ मुनाफ़े के लिए बेची न जाएँ; (3) शैक्षणिक संस्थान इस पुस्तक का उपयोग/प्रतिलिपि बनाने के लिए स्वतंत्र हैं, भले ही वे शिक्षा शुल्क ही क्यों न लेते हों; और (4) Shepherds Global Classroom की अनुमति और पर्यवेक्षण के बिना इस पुस्तक का अनुवाद न किया जाए।

विषय-वस्तु

पुस्तिका को प्रशिक्षण के लिए प्रयोग में लाना 5

(1) स्थानीय सेवकाई प्रशिक्षण का महत्व 7

(2) Shepherds Global Classroom का परिचय 15

(3) एक सम्भावित शिक्षक की योग्यता 19

(4) अपने छात्रों को समझना 23

(5) अच्छे शिक्षण की पद्धतियाँ 27

(6) SGC पाठ्यक्रमों को कैसे सिखाएँ 31

(7) शिक्षकों की खोज करना 35

(8) एक स्थानीय संस्थान का संचालन 39

SGC की ओर से ऑनलाइन संसाधन 49

पुस्तिका को प्रशिक्षण के लिए प्रयोग में लाना

यह पुस्तिका मुख्य रूप से प्रशिक्षकों, प्रबन्धकों और स्थानीय शिक्षकों के लिए एक सन्दर्भ मार्गदर्शिका है। कई बार प्रशिक्षक इस पुस्तिका का उपयोग स्थानीय संस्थानों के शिक्षकों और प्रबन्धकों के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के रूप में कर सकते हैं। अन्य समयों पर, इसकी पाठ्य-सामग्री के विभिन्न खण्डों का उपयोग किसी विशेष विषय पर प्रशिक्षण देने या शेफर्ड्स ग्लोबल क्लासरूम (चरवाहों की वैश्विक पाठशाला) का परिचय देने के लिए किया जा सकता है।

एक प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान पूरी पुस्तिका को सिखाने में लगभग छह घण्टे लगते हैं। प्रशिक्षकों को बार-बार चर्चा के लिए रुकना चाहिए। पाठ में कुछ चर्चा प्रश्न शामिल हैं, जिन्हें ► चिह्न द्वारा दर्शाया गया है।

प्रशिक्षुओं को बाइबल, लेखन पाठ्य-सामग्री और इस पुस्तिका की एक प्रति की आवश्यकता पड़ेगी।

प्रशिक्षकों को विभिन्न प्रकार के SGC पाठ्यक्रम लाने चाहिए जिससे कि छात्र उन्हें जाँच सकें। कक्षा को कई अलग-अलग पाठ्यक्रमों में से प्रत्येक की कम से कम तीन प्रतियों की आवश्यकता पड़ेगी ताकि छात्र तीन-तीन के समूहों में एक दूसरे को सिखाने का अभ्यास कर सकें।

जब प्रशिक्षक अध्याय 6 को सिखा चुके हों, तब छात्रों को SGC पाठ्यक्रमों पर गौर करना चाहिए। उन्हें पाठ्यक्रमों के मुखपृष्ठ पर दिए गए विभिन्न दिशानिर्देशों पर गौर करना चाहिए। छात्रों को दिशानिर्देशों पर चर्चा करके यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उन्हें वे समझ आ रहे हैं या नहीं।

प्रशिक्षण के लिए प्रस्तुति और अभ्यास आवश्यक पड़ती है। प्रशिक्षक इस बात की प्रस्तुति दे सकता है कि पाठ्यक्रमों से तीन पाठ सिखाकर कैसे सिखाया जाए। यदि प्रत्येक पाठ अलग-अलग पाठ्यक्रम से हो तो प्रस्तुति देना अच्छा होता है। यदि एक से अधिक प्रशिक्षक या कुछ उन्नत शिक्षा वाले छात्र उपलब्ध हों, तो वे विभिन्न शैलियों की प्रस्तुति देने के लिए पाठ को पढ़ा सकते हैं।

प्रस्तुति को देखने के बाद, इस पाठ्यक्रम के छात्रों को प्रशिक्षण का अभ्यास करने की आवश्यकता पड़ती है। प्रत्येक छात्र पाठ्यक्रम के एक खण्ड को अन्य छात्रों के समूह को सिखा सकता है। प्रत्येक छात्र के लिए समय 10 मिनट होना चाहिए। इस अभ्यास का उद्देश्य यह है कि छात्र पाठ्यक्रम की रूपरेखा को समझें और इस प्रकार सिखाएँ कि दूसरे भी सुसज्जित हो सकें। अभ्यास शिक्षण के लिए पूर्व तैयारी अच्छी होती है, लेकिन छोटे प्रशिक्षण काल में यह सम्भव नहीं भी हो सकती। प्रत्येक छात्र के अभ्यास के बाद प्रशिक्षक और अन्य छात्र टिप्पणियाँ करें।

अभ्यास का एक अन्य ढाँचा यह है कि छात्रों को 4–6 के समूहों में बाँटा जाए। प्रत्येक छात्र को अभ्यास का अवसर मिले। प्रशिक्षकों को समूहों का निरीक्षण करना चाहिए और मार्गदर्शन देना चाहिए। प्रशिक्षक को समय-सीमा निर्धारित करनी और संकेत देना आवश्यक होगा कि कब शिक्षण की भूमिका अगले व्यक्ति को दी जानी चाहिए।

अध्याय 1
स्थानीय सेवकाई प्रशिक्षण का महत्व

परिचय

कलीसिया को सिखाना चाहिए। यीशु ने कलीसिया से कहा कि वह हर स्थान पर जाकर उसकी आज्ञाओं के बारे में सिखाए (मत्ती 28:19-20)। पौलुस ने कहा कि एक पास्टर को सिखाने योग्य होना चाहिए (1 तीमुथियुस 3:2)। यह शिक्षा शिष्यत्व के कार्य का हिस्सा है। कलीसिया लोगों को यह सिखाती है कि वे विश्वासियों के रूप में कैसे जीएँ, और परमेश्वर की महिमा के लिए कैसे जीएँ। यह शिक्षा हर उस जगह दी जानी चाहिए जहाँ विश्वासी मौजूद हैं। सामर्थी कलीसियाएँ सिखाने के लिए बाइबल की ऐसी सच्चाई और व्यावहारिक तरीकों से लैस होती हैं, जिनसे वे अपने लोगों को उद्देश्यपूर्ण तरीके से सिखा सकती हैं।

कलीसिया को प्रशिक्षण देना चाहिए।

> और जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों (2 तीमुथियुस 2:2)।

शिक्षण की आवश्यकता सेवकाई प्रशिक्षण की आवश्यकता को उत्पन्न करती है। पौलुस ने तीमुथियुस को ऐसे लोगों को प्रशिक्षित करने के लिए कहा जो दूसरों को सिखाने के योग्य हों (2 तीमुथियुस 2:2)। प्रशिक्षण केवल सूचना के बारे में सिखाना नहीं है। प्रशिक्षण का अर्थ केवल विश्वासियों को अपने लाभ के लिए सिखाना नहीं है। प्रशिक्षण दूसरों की सहायता करने के लिए विश्वासियों को तैयार करता है।

यीशु ने सेवकाई प्रशिक्षण की प्राथमिकता का प्रदर्शन किया। अपनी सेवकाई की शुरुआत में, उसने कुछ ऐसे लोगों को चुना जिन्होंने कलीसिया का मार्गदर्शन किया और उसे बढ़ाया। उसने अपना सारा समय लोगों की भीड़ को उपदेश देने में नहीं लगाया; इसके बजाय, वह अक्सर बारह अगुवों को प्रशिक्षित करने के लिए समय निकाला करता था। उसने अपनी सेवकाई को उन लोगों के द्वारा बढ़ाया जिन्हें उसने प्रशिक्षित किया था।

प्रेरितों 8:26-31 हमें फिलिप्पुस की कहानी बताता है, जिसे परमेश्वर ने सामरिया छोड़कर गाज़ा के पास एक विशेष मार्ग पर जाने के लिए बुलाया। वहाँ उसकी मुलाकात इथियोपिया के एक व्यक्ति से हुई, जो अपने रथ में बैठा यशायाह की भविष्यवाणियाँ पढ़ रहा था। "तू जो पढ़ रहा है क्या उसे समझता भी है?" फिलिप्पुस ने पूछा। उस अफ्रीकी ने उत्तर दिया, "जब तक कोई मुझे न समझाए तो मैं कैसे समझूँ?"

जब तक कोई मुझे न समझाए तो मैं कैसे समझूँ? यह वाक्य हमें दिखाता है कि लोगों को बाइबल की सच्चाई को

समझाने के लिए परमेश्वर द्वारा भेजे गए मानवीय शिक्षकों की आवश्यकता होती है। यद्यपि पवित्र आत्मा बहुत सी अलौकिक बातें कर रहा था, फिर भी परमेश्वर मानवीय शिक्षकों का उपयोग कर रहा था। यह प्रशिक्षण की आवश्यकता के प्रति परमेश्वर की सामान्य प्रतिक्रिया है।

Shepherds Global Classroom ऐसे प्रशिक्षकों के हाथों में पाठ्यक्रम देता है जो पुरुषों और स्त्रियों को परमेश्वर के वचन की सच्चाई में मार्गदर्शन कर सकें।

Shepherds Global Classroom ने स्थानीय सेवकाईयों द्वारा संचालित एक हस्तांतरणीय यानी आगे सौंपे जाने वाला प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान किया है।

स्थानीय सेवकाई प्रशिक्षण के उद्देश्य

पास्टरों को प्रशिक्षित करने के लिए

पास्टरों को शिक्षा, बाइबल की व्याख्या, उपदेश और शिष्यता की पद्धतियों में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। पूरे संसार में हजारों कलीसियाओं की अगुवाई ऐसे पास्टरों के द्वारा की जाती है जिनके पास बहुत थोड़े मुद्रित संसाधन हैं और कोई उद्देश्यपूर्ण प्रशिक्षण नहीं है। कई पास्टर प्रशिक्षित नहीं होते हैं और स्वयं को दूसरों को प्रशिक्षित करने के योग्य महसूस नहीं करते हैं।

David Livermore ने कहा है,

> "पूरी दुनिया में कलीसिया की तीव्र वृद्धि ऐसे पास्टरों और कलीसिया के अगुवों की कमी उत्पन्न कर रही है जो थियोलॉजिकल रूप से प्रशिक्षित हों। संसार में लगभग 22 लाख इंजीलवादी कलीसियाएँ हैं। इन में से 85% का नेतृत्व ऐसे पुरुषों और स्त्रियों द्वारा किया जा रहा है जिन्हें कोई थियोलॉजिकल प्रशिक्षण प्राप्त नहीं है। बढ़ती हुई कलीसिया की देखभाल के लिए प्रतिदिन 7,000 नए कलीसिया अगुवों की आवश्यकता है।"[1]

पूरे संसार के अधिकांश सम्भावित पास्टर बाइबल कॉलेज में नहीं जा सकते हैं। उनके लिए कई वर्षों तक अपने परिवार, रोजगार और सेवकाईयों को कहीं पर कक्षाओं में भाग लेने के लिए छोड़ कर जाना व्यावहारिक नहीं है। उन्हें स्थानीय प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

Shepherds Global Classroom का उद्देश्य इन कलीसिया अगुवों को बाइबल आधारित, थियोलॉजिकल और व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करना है, जिन्हें थियोलॉजी या सेवकाई में कोई औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं है।

---

[1] David Livermore. "American or American't: A Critical Analysis of Western Training to the World." *Evangelical Missions Quarterly* 40, no. 4 (Oct 2004): 456.

गवाहों को प्रशिक्षित करने के लिए

कोई भी ऐसा व्यक्ति जिसने परमेश्वर के बचाने वाले अनुग्रह का अनुभव किया है वह सुसमाचार प्रचार करने के योग्य है। लोग बता सकते हैं कि परमेश्वर ने उनके लिए क्या किया है। उनकी गवाही कायल करने वाली हो सकती है, खासकर उन लोगों के लिए जो उन्हें जानते हैं और उनके जीवन में परिवर्तन को देखते हैं।

हलाँकि, कभी-कभी एक व्यक्ति सुसमाचार के मूल बातों की व्याख्या करने में योग्य नहीं होता है। यदि श्रोता ऐसी स्थिति में हैं, जो उस व्यक्ति की गवाही से भिन्न प्रतीत होती है, तो वे यह नहीं समझ सकते कि वे उसी परिवर्तन का अनुभव कैसे कर सकते हैं।

यहाँ तक कि कोई ऐसा व्यक्ति जो वर्षों से एक विश्वासी रहा हो वह अपने समुदाय के सामने सुसमाचार प्रचार करने में अयोग्यता महसूस कर सकता है, क्योंकि वह मसीहियत के बारे में पूछे जाने वे प्रश्नों का उत्तर देने में असमर्थ होता है। यह विश्वासी पुरुष या स्त्री मन फिराव के अपने स्वयं के अनुभव, आराधना की भावनाओं को जानता है, और यह जानता है कि मसीह की देह में दूसरों के साथ संगति करना कैसा होता है, परन्तु वह इन बातों को समझाने के लिए योग्य नहीं है।

कभी-कभी किसी समुदाय के लोग मसीहियत के प्रति विरोधी धर्म के होते हैं। वे एक अच्छा जीवन जीने वाले मसीह के अनुयायियों का सम्मान करना सीख सकते हैं, परन्तु उन्हें मसीहियत की बातों को सुनने की भी आवश्यकता है।

सुसमाचार के सिद्धान्तों और सुसमाचार का सहयोग करने वाले बुनियादी सिद्धान्तों को सीखकर एक व्यक्ति अधिक प्रभावी गवाह बन सकता है।

कलीसिया की रक्षा के लिए

पास्टर अच्छी शिक्षा के द्वारा अपनी कलीसियाओं की रक्षा करने के लिए उत्तरदायी हैं (तीतुस 1:9-14)। झूठी कलीसियाएँ और झूठे धर्म लोगों को भ्रमित करने और धोखा देने के लिए अपने विचारों का उपयोग करते हैं। यह दुःख की बात है कि बहुत से ऐसे लोग जिन्होंने कभी मन फिराया था परन्तु बाद में वे किसी झूठी कलीसिया में चले गए।

पास्टर को लोगों को बाइबल की शिक्षा सिखानी चाहिए ताकि लोग अपने विश्वास में जड़ पकड़ सकें। शिक्षण को उद्देश्यपूर्ण और व्यवस्थित होना चाहिए और कलीसिया के सभी लोगों तक पहुँचने के लिए उसे विभिन्न स्तरों पर प्रदान किया जाना चाहिए।

युगांडा, अफ़्रीका में एक प्रभावशाली पास्टर Richmond Wandera यह देखते हैं कि बहुत से मसीही झूठे धर्मों से आई प्रथाओं का पालन कर रहे हैं। "रविवार को लोग अपने हाथ उठाकर परमेश्वर की उपासना करते हैं, और सोमवार

को जब उनका बच्चा बीमार हो जाता है, तो वे किसी जादू-टोने वाले के पास चले जाते हैं। और यही बात है जो मुझे रात में जागे रखती है।"[2] उन्होंने देखा कि झूठे धर्मों की प्रथाएँ बहुत-सी अफ्रीकी कलीसियाओं में सामान्य सी लगती हैं। यह समस्या संसार भर की कलीसियाओं में विभिन्न रूपों में पाई जाती है।

► आपके देश में कौन-कौन से झूठे विश्वास हैं जो मसीहियों को प्रभावित करते हैं?

सेवकाई की टीम का विस्तार करने के लिए

एक खेल की टीम में ऐसे खिलाड़ियों के लिए एक बेंच होती है, जो हमेशा खेल में नहीं खेलते हैं। वे प्रमुख खिलाड़ियों की तुलना में जवान और कम अनुभवी हो सकते हैं, परन्तु वे प्रशिक्षण ले रहे होते हैं। उनमें से कुछ के भीतर ऐसी विशेष क्षमताएँ होती हैं, जिनकी निश्चित समय पर आवश्यकता पड़ती है।

एक स्वस्थ, बढ़ती हुए कलीसिया में एक ऐसी ही "बेंच" होना चाहिए। यह सोचना गलत है कि अगुवाई के पद भरे जाने के कारण टीम पूरी हो गई है। एक सेवकाई अपनी पहुँच सीमा तक पहुँच जाती है और तब तक आगे नहीं बढ़ती जब तक कि नए रूपों में सेवकाई शुरू करने में सहायता करने के लिए अगुवे न हों।

एक स्वस्थ कलीसिया के पास "बेंच" पर ऐसे लोग होने चाहिए जो विकासित हो रहे हैं और अभ्यास करने वाले हों। इसके लिए स्थानीय प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। इसलिए, सेवकाई प्रशिक्षण केवल उन लोगों के लिए नहीं है, जो सेवकाई के पदों पर हैं।

पास्टर का काम स्थानीय प्रशिक्षण देना है। पास्टर स्वयं सारा प्रशिक्षण नहीं दे पाएगा, परन्तु उसे इसकी व्यवस्था करनी चाहिए और इसे बढ़ावा देना चाहिए। उसे ऐसे लोगों की टीम की आवश्यकता पड़ती है, जो विभिन्न भूमिकाओं में काम करते हों।

> उसने कुछ को प्रेरित नियुक्त करके, और कुछ को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कुछ को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कुछ को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया, जिस से पवित्र लोग सिद्ध हो जाएँ और सेवा का काम किया जाए और मसीह की देह उन्नति पाए, जब तक कि हम सब के सब विश्वास और परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में एक न हो जाएँ, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएँ और मसीह के पूरे डील–डौल तक न बढ़ जाएँ। ताकि हम आगे को बालक न रहें जो मनुष्यों की ठग–विद्या और चतुराई से, उन के भ्रम की युक्तियों के और उपदेश के हर एक झोंके

[2] Bryierley, Justin. "Richmond Wandera: Theological and spiritual revival in Africa". *Unbelievable?*. Podcast audio, March 21, 2023. https://podcasts.apple.com/us/podcast/unbelievable/id267142101?i=1000605211864

से उछाले और इधर–उधर घुमाए जाते हों। वरन् प्रेम में सच्चाई से चलते हुए सब बातों में उसमें जो सिर है, अर्थात् मसीह में बढ़ते जाएँ (इफिसियों 4:11-15)।

परमेश्वर स्थानीय कलीसिया के लोगों को कलीसिया के मिशन को पूरा करने के लिए आवश्यक वरदान और क्षमताएँ प्रदान करता है। कलीसिया को लोगों को उद्देश्यपूर्ण ढंग से विकसित करने की जिम्मेदारी लेनी चाहिए।

स्वदेशी कलीसिया को मजबूत बनाने के लिए

एक स्वदेशी कलीसिया की अगुवाई, सहयोग, और स्वामित्व स्थानीय लोगों के हाथों में होता है। यह विदेशी सहयोग या दिशानिर्देशों पर निर्भर नहीं है। कलीसियाओं के स्वास्थ्य और बढ़ोतरी के लिए स्थानीय लोगों का बल महत्वपूर्ण है।

एक स्वदेशी कलीसिया अपनी संस्कृति से परिचित होती है। यह कोई विदेशी कलीसिया नहीं है।

एक स्वस्थ स्वदेशी कलीसिया के कई लाभ होते हैं:

1. यह अपनी संस्कृति में प्रभावी रूप से प्रचार करती और शिष्यता देती है।
2. मण्डली परिपक्व होती चली जाती है और विदेशी निर्भरता के बिना मसीह की देह के रूप में कार्य करती है।
3. अगुवे अपनी पूरी क्षमता को विकसित कर लेते हैं।
4. स्थानीय प्रतिभागी सेवकाई को सहयोग और जवाबदेही उपलब्ध करवाते हैं।

कुछ स्वदेशी कलीसियाएँ स्वस्थ नहीं होती हैं, क्योंकि उनमें शिक्षा सम्बन्धी स्थिरता और मसीही जीवन के बाइबल मानकों का अभाव रहता है। वे अपने समुदायों को एक शक्तिशाली, सुसंगत गवाही से प्रभावित करने में असफल रहती हैं। वे उन अगुवों के भरमावे में आने के जोखिम में होती हैं, जिनमें प्रतिभा तो होती है, परन्तु उनमें चरित्र की कमी होती है। उनके पास अगुवों के विकास के लिए एक कार्यक्रम की कमी होती है। उन्हें स्थानीय सेवकाई प्रशिक्षण के लिए एक कार्यक्रम की आवश्यकता है।

कई बार किसी कलीसिया को विदेशी मिशनरियों द्वारा इस लक्ष्य के साथ शुरू किया जाता है कि वह कलीसिया अन्त में स्वदेशी बन जाएगी। प्रगति को मापने के लिए स्थानीय सहयोग में वृद्धि और स्थानीय अगुवों की बढ़ती जिम्मेदारी शामिल है।

उन स्थानीय अगुवों के विकास के लिए स्थानीय प्रशिक्षण आवश्यक है, जो शिक्षा के विषय में सिखाते हैं, व्यावहारिक जीवन के लिए विश्वास को अपनाते हैं, और अच्छी सेवकाई शैलियों और रणनीतियों का विकास करते हैं।

कलीसियों की स्थापना के लिए

यह दुःख की बात है कि बहुत सी कलीसियाएँ अन्य समुदायों तक सुसमाचार भेजे बिना वर्षों तक कार्य करती रहती हैं। कलीसियाओं को प्रचारकों के समूहों को प्रशिक्षित करना चाहिए और उन क्षेत्रों में भेजना चाहिए जहाँ कलीसियाएँ नहीं हैं। ऐसे समूहों का लक्ष्य मन फिराने वाले लोगों का एक नया समूह बनाना होना चाहिए जो बाद में एक कलीसिया बन जाते हैं।

कुछ प्रचारकों को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए जिससे वे मन फिराने वाले लोगों के समूहों की कलीसिया बनने में सहायता कर सकें। उन्हें नए विश्वासियों को मसीही जीवन जीने का तरीका सिखाकर शिष्य बनाने के योग्य करना चाहिए। उन्हें मन फिराने वाले लोगों को सुसमाचार प्रचार करने और सेवकाई की जिम्मेदारी लेने के लिए प्रशिक्षित करने योग्य होना चाहिए।

अधिकाँश नई कलीसियाओं की अगुवाई एक स्थानीय व्यक्ति द्वारा की जाएगी, न कि किसी ऐसे पास्टर द्वारा जो उस समुदाय में रहने के लिए कहीं और से आया है। शैक्षणिक प्रशिक्षण वाले अधिकाँश पास्टर किसी नई कलीसिया में पास्टर बनने या छोटे शहर में सेवा करने के इच्छुक नहीं होते हैं। हमें उस स्थानीय विश्वासी को सेवकाई का प्रशिक्षण प्रदान करना चाहिए जिसे परमेश्वर ने कलीसिया की अगुवाई करने के लिए बुलाया है।

मिशनरियों को तैयार करने के लिए

मिशनरी वह व्यक्ति होता है, जिसे कलीसिया द्वारा सुसमाचार के प्रभाव को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से कहीं भेजा जाता है। शब्द मिशनरी विशेष रूप से एक ऐसे व्यक्ति के लिए उपयोग किया जाता है, जो दूसरे देश और/या अन्य संस्कृति में जाता है, परन्तु कभी-कभी यह उस व्यक्ति को भी दर्शाता है, जो अपने ही देश के किसी दूसरे समुदाय में जाता है।

संसार के कुछ क्षेत्रों में तेजी से सुसमाचार अधिकाँश उन मिशनरियों के द्वारा फैल रहा है, जो अपने देश के दूसरे क्षेत्र में जाते हैं। प्रशिक्षण उनकी प्रभावशीलता और शिक्षा सम्बन्धी स्थिरता को बढ़ा देगा।

10/40 की खिड़की भूमध्य रेखा के 10 डिग्री दक्षिण से 40 डिग्री उत्तर का एक क्षेत्र है, जो उत्तरी अफ्रीका और दक्षिणी एशिया में फैला हुआ है और इसमें चीन और भारत के देश शामिल हैं। 10/40 खिड़की में संसार की 2/3 आबादी रहती है। 10/40 खिड़की में रहने वाले 80% से अधिक लोगों तक सुसमाचार नहीं पहुँचा है।

संसार के कुछ देशों में काफी हद तक सुसमाचार नहीं पहुँचा है, हालाँकि उनके बड़े शहरों में कई सालों से कलीसियाएँ मौजूद हैं। एक व्यक्ति एक कलीसिया में कई वर्षों तक सेवा कर सकता है, परन्तु फिर भी हो सकता है कि वह यह न जानता हो कि किसी नए स्थान पर सेवकाई कैसे शुरू की जाती है। वह केवल इतना ही जानता हो कि कलीसिया

की इमारत में विश्वासियों के समूह से कैसे बात करनी है। कलीसिया को मिशनरियों को सुसमाचार के संदेश और विश्वासियों के स्थानीय परिवार बनाने के लक्ष्य के साथ जाने के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए।

► जिन कलीसियाओं को आप जानते हैं, उनके संदर्भ में सेवकाई प्रशिक्षण के लिए ऊपर दिए गए कारणों में से कौन-से कारण सबसे अधिक आवश्यक लगते हैं? क्यों?

अध्याय 2

Shepherds Global Classroom का परिचय

Shepherds Global Classroom का मिशन

SGC मसीह की देह को सुसज्जित करने के लिए मौजूद है, ताकि संसार भर में मसीही अगुवों को विकसित करने के लिए पाठ्यक्रम प्रदान किया जा सके।

हम अगुवों को वे उपकरण प्रदान करते हैं जिनकी उन्हें आवश्यकता है ताकि वे स्थानीय कलीसियाओं में हर जगह सेवकाई प्रशिक्षण उपलब्ध करा सकें। हमारा 20-पाठ्यक्रम वाला पाठ्यक्रम उन स्थानीय शिक्षकों के लिए उपलब्ध है जिन्हें परमेश्वर ने संसार के हर देश में बुलाया और योग्य बनाया है। कार्यक्रम की लचीलापन के कारण, घर, कलीसिया भवन, कैफ़े, और यहाँ तक कि पेड़ों की छाया भी प्रशिक्षण केंद्र बन जाते हैं जहाँ मसीही अगुवों को सेवकाई के लिए प्रशिक्षित किया जाता है।

ऊबर नाम की टैक्सी कम्पनी हर दिन 55 लाख यात्रियों को यात्रा करवाती है। इसके लिए कारों के साथ चालकों की एक बड़े श्रम बल की आवश्यकता पड़ती है। ऊबेर ने हजारों कारें नहीं खरीदीं; इसके बजाय, उसने स्थानीय ड्राइवरों को इस काम पर रखा कि वे अपनी-अपनी कारों का उपयोग करके उबर के यात्रियों को उनके गंतव्य तक ले जाएँ। उन्होंने अपने व्यवसाय में आने वाली श्रमिक समस्या का समाधान कर दिया। इसी तरह, SGC पहले से मौजूद सम्भावित शिक्षकों को तैयार करके हर जगह प्रशिक्षण उपलब्ध करवाता है। परमेश्वर ने स्थानीय विश्वासियों को सिखाने की क्षमता और इच्छा के वरदान दिए हैं। हमारा उद्देश्य है उन्हें सुसज्जित करना!

शिक्षा सम्बन्धी नींव

SGC किसी विशेष संप्रदाय से संबद्ध नहीं है। हम ऐतिहासिक त्रिएकतावादी शिक्षाओं को मानते हैं जैसा कि नीकिया, चाल्सीदोन और अथनेसीयन विश्वास कथनों में बताया गया है। हम बाइबल के पूर्ण अधिकार की अधीनता को स्वीकार करते हैं। हम अनुग्रह, विश्वास और उद्धार की सुसमाचार आधारित शिक्षा को थामे रखते हैं। हम विश्वास करते हैं कि विश्वासी में परमेश्वर के अनुग्रह का कार्य उसे पवित्र मन और विजयी जीवन की ओर ले जाता है।

उद्देश्यपूर्ण पाठ्यक्रम संरचना

सम्भावित स्थानीय शिक्षकों को एक ऐसे विशेष पाठ्यक्रम की आवश्यकता होती है, जो उन्हें प्रशिक्षण सेवकाई के लिए शीघ्रता से तैयार करता हो। SGC पाठ्यक्रम को विशेष रूप से निम्नलिखित बातों के लिए बनाया गया है:

- इसके 20 पाठ्यक्रमों में सुसमाचार आधारित शिक्षा के विषय में विस्तारपूर्वक बताया गया है।

- इसे योग्य, अनुभवी, अन्तर-सांस्कृतिक प्रशिक्षकों द्वारा विकसित किया गया है।
- यह हरेक संस्कृति में उपयोगी है।
- इसे स्पष्ट और आसान भाषा में लिखा गया है।
- यह सांप्रदायिक रूप से अलग करने वाली बातों के बिना सुसमाचार आधारित सत्य पर जोर देता है।
- यह जीवन और सेवकाई के लिए व्यावहारिक और प्रासंगिक है।
- यह विभिन्न परिस्थितियों और विभिन्न प्रकार के समूहों के लिए अपनाए जाने योग्य है।
- यह कई भाषाओं में उपलब्ध है।
- यह उन वरदानों का उपयोग करता है, जिन्हें परमेश्वर ने स्थानीय कलीसियाओं को दिया है।
- यह अगुवों को ऐसे प्रशिक्षकों के रूप में तैयार करता है जो स्थानीय कार्यक्रम स्थापित करते हैं।
- यह छात्रों को शीघ्रता से दूसरों को सिखाने के लिए तैयार करता है।
- इसे समूह अध्ययन के लिए बनाया गया है परन्तु यह व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी उपयोगी है।
- यह डिजिटल रूप में निःशुल्क उपलब्ध है।
- इसके लिए किसी अन्य पाठ्यपुस्तक की आवश्यकता नहीं है।

पाठ्यक्रम के लेखकों के पास उन्नत शैक्षणिक प्रशिक्षण, शिक्षण अनुभव और अन्तर-सांस्कृतिक सेवकाई का अनुभव है।

SGC पाठ्यक्रम में सेवकाई संस्थान कार्यक्रम की आवश्यक बातें शामिल हैं। वे विभिन्न समूहों को सिखाने के लिए उपयोगी हैं, जैसे कि पास्टरों की कक्षा या गृह बाइबल अध्ययन समूह।

पाठ्यक्रमों को स्थानीय शिक्षकों को स्थानीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन करने के लिए शीघ्रता से तैयार करने के लिए बनाया गया है। ऐसा व्यक्ति जिसके पास आत्मिक परिपक्वता है, बाइबल का ज्ञान है, और सिखाने का वरदान है, वह बिना किसी विस्तृत प्रशिक्षण के इन पाठ्यक्रमों को सिखा सकता है।

पाठ्यक्रमों को इस आशय से बनाया गया कि ये सिखाने में आसान हों, इनके तहत चर्चा प्रश्नों और नियत कार्य भी दिये गए हैं। ऐसे खण्ड दिए गए हैं, जिन्हें छात्र अभ्यास के लिए सिखा सकते हैं। प्रत्येक पाठ्यक्रम की औसत लंबाई 160 पृष्ठ है, जो 7-19 पाठों में विभाजित है।

SGC पाठ्यक्रम कलीसिया के मिशन को पूरा करने के लिए साधनों का एक बहुमूल्य बक्सा है।

ध्यान दें: यह तब सबसे अच्छा रहता है, जब छात्रों के पास पहले से ही बाइबल का कुछ ज्ञान और आत्मिक परिपक्वता हो। इन पाठ्यक्रमों को नए विश्वासियों के शिष्यत्व के लिए तैयार नहीं किया गया है। हम हम शिष्यत्व

के लिए "शिष्यता पाठों की खेती" (SGC की ओर से भी उपलब्ध है) नामक शृंखला का उपयोग करने की सलाह देते हैं।

सेवकाई सम्बन्ध संरचना

Shepherds Global Classroom की साझेदारी **मिशन संगठनों/राष्ट्रीय सेवकाईयों** के साथ है जिससे स्थानीय प्रशिक्षण उपलब्ध करवाया जा सके। प्रत्येक मिशन संगठन/राष्ट्रीय सेवकाई स्थानीय कलीसियाओं की **स्थानीय संस्थान** शुरू करने में सहायता करके उनकी सेवा करता है।

निम्नलिखित सूचियाँ उनकी भूमिकाओं और जिम्मेदारियों का वर्णन करती हैं

1. Shepherds Global Classroom
2. मिशन संगठन/राष्ट्रीय सेवकाई, और
3. स्थानीय संस्थान

क्योंकि वे मसीही सेवकों के प्रशिक्षण के लिए सहयोग करते हैं।

Shepherds Global Classroom की भूमिका

- 20 सेवकाई प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का एक समूह को उपलब्ध करवाना।
- SGC वेबसाइट से डाउनलोड करने के लिए पाठ्यक्रम उपलब्ध करवाना।
- पाठ्यक्रम, वीडियो और प्रशिक्षण सामग्री वाली SGC ऐप उपलब्ध करवाना।
- विभिन्न भाषाओं में पाठ्यक्रमों के अनुवाद का निरीक्षण करना।
- शिक्षक प्रशिक्षण के लिए एक पाठ्यक्रम उपलब्ध करवाना और क्षेत्रीय कार्यक्रमों के लिए प्रशिक्षकों को भेजना।
- अनुमोदित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में नामांकित छात्रों के लिए पाठ्यक्रम पूर्णता प्रमाण पत्र उपलब्ध करवाना।

मिशन संगठन/राष्ट्रीय सेवकाई की भूमिका

- कलीसियाओं को स्थानीय संस्थानों का संचालन करने के अवसर प्रदान करना।
- SGC पाठ्य-सामग्री को बढ़ावा देना और स्थानीय संस्थानों के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित करना।
- क्षेत्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करने के लिए SGC के साथ भागीदारी करना।
- पाठ्यक्रमों के मुद्रण और वितरण की व्यवस्था करना।

- प्रशिक्षण सामग्री के लिए SGC वेबसाइट और ऐप की सिफारिश करना।
- परामर्श और नई पाठ्य-सामग्री प्रदान करने के लिए नियमित रूप से शिक्षकों से संपर्क करना।
- प्रमाण पत्र प्रदान करने के लिए स्थानीय प्रशिक्षण केंद्रों को अनुमोदित करना।

स्थानीय संस्थान की भूमिका

- कक्षाओं के मिलने के लिए एक प्रशिक्षण स्थान उपलब्ध करवाना।
- स्थानीय शिक्षकों का चयन करना और यदि आवश्यक हो तो उनका सहयोग करना।
- छात्रों को भर्ती करना और उन्हें पंजीकृत करना।
- मुद्रित पाठ्यक्रमों की लागत के लिए भुगतान करना।
- कक्षाओं की समय सारणी बनाना और उन्हें संचालित करना
- छात्रों की उपस्थिति और असाइनमेंट का रिकॉर्ड बनाए रखना।

अध्याय 8 मिशन संगठन/राष्ट्रीय सेवकाई और स्थानीय संस्थान के बीच के सम्बन्धों के बारे में अधिक विवरण प्रदान करता है।

► आप अपनी सेवकाई की परिस्थितियों में SGC पाठ्यक्रमों के संभावित उपयोग को कैसे वर्णित करेंगे?

अध्याय 3
एक सम्भावित शिक्षक की योग्यता

एक विशेष सेवकाई

शिक्षक विशेष लोग होते हैं। प्रेरित याकूब हमें चेतावनी देता है कि सबका शिक्षक बनना सही नहीं है, क्योंकि शिक्षकों की परमेश्वर के प्रति विशेष जवाबदेही रहती है और यदि वे विश्वासयोग्य न ठहरें तो दोषी ठहरते हैं (याकूब 3:1)।

प्रेरित पौलुस ने चेतावनी दी कि एक व्यक्ति ज्ञान पर घमण्ड कर सकता है और दूसरों को तुच्छ समझ सकता है (1 कुरिन्थियों 8:1)। उसने कहा कि प्रेम हमें स्वयं को ऊँचा उठाने के बजाय दूसरों की उन्नति करने के लिए प्रेरित करता है। ज्ञानी लोगों को इसे दूसरों की सहायता करने का साधन समझना चाहिए न कि कोई ऐसी बात जो उन्हें श्रेष्ठ बनाती है। यदि वे ज्ञान के द्वारा सम्मान पाना चाहते हैं, तो वे गलत तरीके से प्रेरित हैं और हानि ही पहुँचाएंगे।

ये चेतावनियाँ उन लोगों के लिए महत्वपूर्ण हैं, जो सेवकाई की किसी भी भूमिका में सिखाना या सेवा करना चाहते हैं, क्योंकि उन्हें अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए ताकि कि वे अपने ज्ञान के द्वारा सेवा कर सकें।

परिवर्तनकारी सत्य

बाइबल अध्ययन के लिए छात्र की ओर से एक विशेष मनोवृत्ति की आवश्यकता होती है। लोग विज्ञान या गणित का अध्ययन उनके अपने स्वयं के चरित्र पर उनके किसी भी प्रभाव को देखे बिना कर सकते हैं। छात्रों को उनके द्वारा प्राप्त किए गए ज्ञान से बदला नहीं जा सकता है। बाइबल की सच्चाई अलग है। बाइबल के छात्र अध्ययन करते समय अपने चरित्र को बदलने की चुनौती महसूस करते हैं। उन्हें पवित्र आत्मा को नम्रतापूर्वक उनके चरित्र को बदलने की अनुमति देनी चाहिए जिससे उनका चरित्र उनके द्वारा सीखी जा रही सच्चाई से मेल खा सके। बाइबल की सच्चाई परिवर्तनकारी है।

एक SGC शिक्षक की योग्यता

► आपके जीवन में प्रभाव डालने वाले किसी शिक्षक की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएँ क्या थीं? उस शिक्षा को प्रभावशाली बनाने वाला क्या था?

इस अध्याय में वर्णित विशेषताओं के अलावा, शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के किसी छात्र को स्थानीय कलीसिया का प्रतिभागी सदस्य होना चाहिए और उसके पास पास्टर की सिफारिश होनी चाहिए।

एक SGC शिक्षक को आत्मिक रूप से परिपक्व, सिखाने में कुशल और बाइबल का जानकार होना चाहिए। योग्य शिक्षकों की खोज करते समय, सबसे पहले उनके चरित्र पर ध्यान देना चाहिए। अच्छा चरित्र कौशल विकसित करने की नींव होता है।

शैक्षणिक आवश्यकताएँ: एक शिक्षक को पाठ्यक्रम सामग्री को अच्छी तरह से पढ़ने, समझने और समझाने योग्य होना चाहिए। यद्यपि एक शैक्षणिक डिग्री एक शिक्षक को निर्देश पद्धतियों और गहन ज्ञान से लैस कर सकती है, परन्तु SGC का दृष्टिकोण ऐसे शिक्षकों को विकसित करना है, जो उसी प्रशिक्षण को दूसरों तक पहुँचा सकें। इस कारण, हम शैक्षणिक डिग्री वाले शिक्षकों की खोज के लिए निर्भर नहीं हैं। हम हर जगह सम्भावित शिक्षकों को आत्मिक वरदान देने के लिए परमेश्वर की विश्वासयोग्यता पर निर्भर हैं। हम उन लोगों को खोजने और तैयार करने की आशा रखते हैं, जिन्हें सिखाने की क्षमता का वरदान मिला है।

नीचे दी गई सूची में ऐसी अन्य विशेषताएँ भी शामिल हैं, जो महत्वपूर्ण हैं। एक शिक्षक हर गुण में उत्कृष्ट नहीं हो सकता है, परन्तु उसे उन सभी में सुधार करने का प्रयास करना चाहिए। जिन शिक्षकों में इनमें से किसी एक का भी अभाव है, वे कम प्रभावी होंगे।

1. **आत्मिक रूप से परिपक्व।** शिक्षक को आत्मिक गुणों का एक अच्छा आदर्श होना चाहिए। यदि शिक्षकों का मसीही जीवन और व्यवहार आपस में हमेशा स्थिर नहीं है, तो वे छात्रों के लिए अच्छे आदर्श नहीं हैं।

2. **उपलब्ध।** यदि किसी की समय सारणी पहले से ही बहुत अधिक व्यस्त है और अच्छी तरह से व्यवस्थित नहीं है, तो ऐसा पुरुष या महिला नियमित शिक्षण सेवकाई के लिए उपलब्ध नहीं है। शिक्षकों को सिखाने के लिए प्राथमिक रूप से तैयार रहना चाहिए। कुछ प्रतिभाशाली लोगों को यह सेवकाई इसलिए नहीं दी जानी चाहिए क्योंकि वे इसे अन्य गतिविधियों से बाधित करेंगे।

3. **भरोसेमन्द।** शिक्षक ऐसे लोग होने चाहिए जो अपनी प्रतिबद्धताओं को पूरा करते हैं। उन्हें समय का पाबंद होना चाहिए और समय सारणी का पालन करने योग्य होना चाहिए। यदि शिक्षक कक्षाओं में नहीं आते हैं या देर से आते हैं तो कक्षा के सदस्य निराश हो जाते हैं।

4. **दृढ़।** शिक्षकों को विश्वास होना चाहिए कि वे यह सीखने योग्य है कि एक समूह की अगुवाई कैसे की जाती। उन्हें कुछ निगरानी वाले अभ्यास की आवश्यकता पड़ सकती है, जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ेगा।

5. **विवाद को सुलझाने योग्य।** जब लोग असहमत होते हैं और समस्याएँ पैदा होती हैं, तो शिक्षकों को सही रवैया रखने की आवश्यकता पड़ती है। उन्हें दूसरों में होने वाले मतभेदों को सुलझाने में सहायता करने योग्य होना चाहिए।

6. **सिखाने योग्य।** क्या लोग शिक्षक की व्याख्या को समझते हैं? शिक्षक ऐसा होना चाहिए जो लोगों को उलझन में न डाले।

7. **परमेश्वर के वचन का भूखा।** शिक्षक ऐसे लोग होने चाहिए जो परमेश्वर के वचन का आनन्द लेते हों, ताकि वे दूसरों को भी उसका आनन्द लेने के लिए आमंत्रित कर सकें। उन्हें परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्धों में बाइबल को महत्वपूर्ण बनाना चाहिए।

8. **परमेश्वर पर निर्भर।** शिक्षकों को यह पता होना चाहिए कि आत्मिक परिणाम केवल पवित्र आत्मा के काम से ही प्राप्त हो सकते हैं। उन्हें पवित्र आत्मा के साथ सहयोग करने के लिए तैयार रहना चाहिए। उन्हें परमेश्वर के अभिषेक पर निर्भर रहना चाहिए। उन्हें इस बात पर भरोसा नहीं करना चाहिए कि उनकी व्याख्या केवल उनकी क्षमताओं के कारण ही सफल होगी।

9. **सेवा करने के लिए तैयार।** शिक्षक ऐसे लोग नहीं होने चाहिए जो सेवा करवाना चाहते हों। उन्हें अपनी प्रतिभा दिखाने के उद्देश्य से सेवकाई की खोज नहीं करनी चाहिए। उन्हें आवश्यकताओं के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए और अपने आप सेवा करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

10. **आत्मिक अधिकार के अधीन।** शिक्षकों को आत्मिक रूप से अन्य व्यक्तियों के प्रति जवाबदेह होना चाहिए। उन्हें आत्मिक अगुवों के निर्देश का पालन करना चाहिए।

11. **कलीसिया के प्रति विश्वासयोग्य।** शिक्षकों को स्थानीय कलीसियाओं के प्रतिबद्ध सदस्य होना चाहिए। उनकी शिक्षा को लोगों प्रेरित करनी चाहिए कि वे कलीसिया की सराहना करें और इसके लिए अधिक प्रतिबद्ध हों।

12. **सफल होने का उत्साह।** यदि शिक्षकों में सफल होने का उत्साह हो तो वे शीघ्र हार नहीं मानेंगे। वे परिस्थितियों के हिसाब से ढल जाएँगे। वे ऐसी जानकारी की खोज करेंगे जो उन्हें अधिक प्रभावी होने में सहायता कर सकती है। समस्या या अवसरों के आने पर वे पहल करेंगे। उनमें ऊर्जा और उत्साह होगा।

13. **धर्मसैद्धान्तिक शिक्षा के सम्बन्ध में सटीक।** प्रत्येक शिक्षक के पास बाइबल, यानी सुसमाचार आधारित धर्मसैद्धान्तिक शिक्षा को लेकर एक अच्छा आधार होना चाहिए।

14. **सेवकाई में अनुभवी।** शिक्षक ऐसे लोग होने चाहिए जो कुछ समय के लिए कलीसिया सेवकाई में विश्वासयोग्य रहे हों।

अध्याय 4
अपने छात्रों को समझना

धार्मिक योग्यताएँ

क्योंकि SGC के कार्यक्रम का उद्देश्य सेवकाई प्रशिक्षण है, छात्र को अच्छी गवाही और परमेश्वर को आदर देने वाली जीवन शैली वाला एक मसीही विश्वासी होना चाहिए। एक अविश्वासी पाठ्यक्रम की अधिकतर सामग्री को नहीं समझ पाएगा या वह उसकी सराहना नहीं करेगा।

छात्र को सुसमाचार आधारित धर्मसैद्धान्तिक शिक्षा सहित मसीहियत के ऐतिहासिक महत्वपूर्ण बातों पर विश्वास करना चाहिए। यह कार्यक्रम हर स्थान पर मसीह की देह की सेवा करने के लिए बनाया गया है, इसलिए इसमें विशिष्ट सांप्रदायिक मान्यताओं की आवश्यकता नहीं है।

छात्र को एक कलीसिया सदस्य होना चाहिए जो अपने कलीसिया की आराधना और संगति में भाग लेता हो। जो छात्र कलीसियाओं के प्रति प्रतिबद्ध नहीं हैं, वे सेवकाई प्रशिक्षण के लिए अच्छे उम्मीदवार नहीं हैं। सही मायनों में, उन्हें कलीसियाओं का हिस्सा होना चाहिए जिससे उन्हें उन बातों का अभ्यास करने का अवसर मिलेगा जिन्हें वे सीख रहे हैं। कुछ नियत कार्यों में अन्य विश्वासियों की भागीदारी शामिल होती है।

आवश्यक शैक्षणिक स्तर

एक स्थानीय संस्थान को ऐसे छात्रों को शिक्षा देने के लिए बनाया जाना चाहिए जो अच्छी तरह से पढ़ और लिख सकते हैं। यह आवश्यक नहीं है कि वे स्कूल ग्रेजुएट हों, परन्तु उन्हें पाठ्यक्रम को समझने और नियत कार्यों को पूरा करने के लिए पढ़ना और लिखना आता हो। संस्थान को उन छात्रों को प्रमाण पत्र प्रदान करना चाहिए जो इस स्तर पर अध्ययन करने योग्य हों।

उन छात्रों को शिक्षण के ऐसे अन्य स्तरों का प्रस्ताव दिया जा सकता है, जो सीखना तो चाहते हों परन्तु नियत कार्य करने योग्य न हों। उदाहरण के लिए, शिक्षक ऐसे लोगों को सामान्य सभाओं या गृह बाइबल अध्ययन समूहों में सिखा सकते हैं, जो अच्छी तरह से नहीं पढ़ते हैं और नियत कार्य नहीं कर सकते हैं।

अपने छात्रों को समझना

स्थानीय SGC संस्थानों में दाखिला लेने वाले छात्र अन्य प्रकार के संस्थानों के छात्रों से अलग होते हैं। वे स्कूल के बच्चों की तरह नहीं हैं। वे विश्वविद्यालय के छात्रों और बाइबल कॉलेज के अधिकतर छात्रों से अलग होते हैं। इस प्रकार की कक्षा के लिए शिक्षकों को उनकी शैली को अनुकूल बनाना चाहिए। कुछ छात्रों की शैक्षणिक क्षमता कॉलेज

के छात्र की क्षमता से कम होगी। शिक्षकों को अपनी अपेक्षाओं को समायोजित करना चाहिए। उन्हें समझाना चाहिए कि छात्रों को नियत कार्य कैसे करने चाहिए। उन्हें आलस्य और लापरवाही की भर्त्सना करनी चाहिए, परन्तु छात्रों के काम के प्रति उनकी आलोचना सहायक और उत्साहजनक होनी चाहिए, यह कभी भी अपमानजनक नहीं होनी चाहिए।

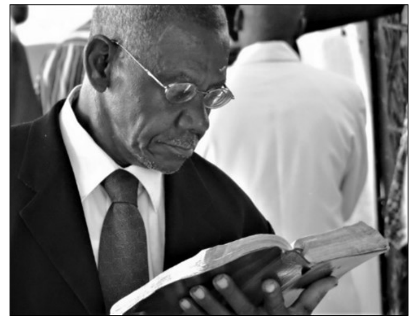

याद रखें, यदि परमेश्वर ने सेवकाई के लिए लोगों को बुलाया है, तो परमेश्वर उन्हें वह क्षमता दे रहा है जिसकी उन्हें आवश्यकता है। छात्र पहले से ही अपने सेवकाईयों में परमेश्वर के अभिषेक और आशीष का प्रदर्शन कर सकते हैं। उन्हें विकसित करने में सहायता करना हमारी जिम्मेदारी है। उन्हें हतोत्साहित करना गलत होगा।

SGC छात्रों के अधिकतर समूहों में विभिन्न आयु वर्गों के लोग होंगे। हो सकता है कि कुछ ने हाल ही में स्कूल समाप्त किया हो। अन्य लोग दादा-दादी की उम्र वाले हो सकते हैं। हो सकता है कि कुछ कई वर्षों से पास्टर रहे हों। कभी-कभी कोई छात्र शिक्षक से भी बड़ी आयु हो सकता है।

बीस वर्ष के एक छात्र के पास जिसने हाल ही में स्कूल समाप्त किया था, साठ वर्ष के एक पास्टर की तुलना में अधिक शैक्षणिक क्षमता हो सकती है। हालाँकि, प्रत्येक का सम्मान किया जाना चाहिए। हमें शैक्षणिक क्षमता का इस तरह सम्मान नहीं करना चाहिए जिससे परिपक्वता और अनुभव का अनादर हो। जबकि हम शैक्षणिक आवश्यकताओं पर जोर देते हैं, तथापि हमें उन छात्रों को शर्मिंदा करने से बचना चाहिए जो उस तरह के काम के आदी नहीं हैं।

वयस्क शिक्षार्थियों के लक्षण

► जब हम बच्चों के स्थान पर वयस्कों को सिखा रहे हों, तो हमारी शिक्षण विधि में क्या भिन्न होना चाहिए?

वयस्क शिक्षार्थी एक ऐसा शब्द है, जिसका उपयोग उस छात्र का वर्णन करने के लिए किया जाता है, जिसका वयस्क जीवन शुरू हो चुका है। हो सकता है कि वयस्क शिक्षार्थी विवाहित हों और उनके बच्चे हों। शायद उन्होंने किसी व्यवसाय या सेवकाई में काम किया हो। उनके पास पहले से ही जीवन के विविध अनुभव हैं। जब वयस्क फिर से छात्र बनने के चुनाव करते हैं, तो वे कुछ व्यक्तिगत लक्ष्यों के प्रति प्रतिबद्ध होते हैं।

शिक्षक और कक्षा की शैली वयस्क शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बनाई जानी चाहिए।

1. **वयस्क शिक्षार्थी ऐसा प्रशिक्षण चाहते हैं जो उनकी तत्काल सहायता करे।** उन्हें इस बात की चर्चा करने की आवश्यकता है कि वे जो सीख रहे हैं, उसका अभ्यास वे कैसे करेंगे। कक्षा में छात्रों को यह बताने का

समय दिया जाना चाहिए कि वे इस ज्ञान को कैसे लागू करने की अपेक्षा रखते हैं। शिक्षक को छात्रों के साथ बातचीत किए बिना कक्षा का पूरा समय पाठ्य-सामग्री प्रस्तुत करने में नहीं बिताना चाहिए।

2. **वयस्क शिक्षार्थी सम्मान चाहते हैं।** उनके पास पहले से ही वयस्क जिम्मेदारियाँ होती हैं और वे अपने साथ बच्चों की तरह वाला व्यवहार नहीं चाहते हैं। शिक्षकों को शिक्षार्थियों का दृष्टिकोण रखना चाहिए और विचारों के प्रति खुलापन दिखाना चाहिए। उन्हें अपने छात्रों के अनुभव और गूढ़ ज्ञान के प्रति सम्मान दिखाना चाहिए।

► आपकी संस्कृति में वयस्क शिक्षार्थियों के प्रति सम्मान दिखाने का सबसे अच्छा तरीका क्या है? एक वयस्क छात्र के रूप में आप चाहते हैं कि आपके साथ कैसा व्यवहार किया जाए?

3. **वयस्क शिक्षार्थी अध्ययन करते समय चुनाव करना चाहते हैं।** उनके अनुभव और लक्ष्य उनके लिए कुछ प्रकार के अध्ययन को आकर्षक और प्रासंगिक बनाते हैं। उन्हें अपनी रुचियों का पता लगाने और अध्ययन की अपनी शैली विकसित करने के लिए स्वतंत्रता की आवश्यकता है।

4. **वयस्क शिक्षार्थी कक्षा में अभ्यास करना चाहते हैं।** शिक्षक को छात्रों की प्रस्तुतियाँ बनाने, पाठ्य- सामग्री के अनुभागों की व्याख्या करने और प्रश्नों के उत्तर देने में सहायता करनी चाहिए। कई बार छात्र अपने अनुभवों के विषय में कहानियाँ सुना सकते हैं। हालाँकि शिक्षकों को समय बर्बाद करने से बचना चाहिए, उन्हें यह भी पता होना चाहिए कि कोई एक कहानी एक छात्र द्वारा सीखी गई किसी बात को लागू करने का तरीका हो सकती है।

5. **वयस्क शिक्षार्थी अन्य छात्रों के साथ सम्बन्ध विकसित कर लेते हैं।** वे एक दूसरे की प्रतिक्रिया से सीखते हैं। वे सम्मान देते हैं और पाते हैं। वयस्क शिक्षार्थी अपने शेष जीवन भर कुछ बातचीतों को याद रखेंगे और उन्हें महत्व देंगे। कई बार चर्चा के लिए कक्षा को छोटे समूहों में विभाजित करने की आवश्यकता पड़ सकती है।

6. **वयस्क शिक्षार्थी अपने निष्कर्षों पर आना चाहते हैं।** वे आशा करते हैं कि विभिन्न प्रकार के विचारों को सहन किया जाए।

7. **वयस्क शिक्षार्थी शिक्षक को पसंद करना और सम्मान करना चाहते हैं।** वे यह अपेक्षा नहीं करते कि उनके और शिक्षक के बीच पद की खाई इतनी बड़ी हो जितनी कि एक विश्वविद्यालय में एक छात्र और प्रोफेसर के बीच होती है। वे शिक्षक के व्यक्तिगत ध्यान देने को महत्व देते हैं। वे केवल शिक्षक के ज्ञान के प्रति ही नहीं बल्कि उसके समर्पित जीवन और चरित्र की प्रशंसा करने योग्य भी होना चाहते हैं।

छात्रों के लिए प्रतिक्रिया

अच्छी अध्ययन आदतों के बारे में बात करने के लिए शिक्षक को कक्षा में और व्यक्तिगत रूप से छात्रों के साथ समय निकालना चाहिए। छात्रों को स्वयं को अनुशासित करना सीखना चाहिए और दैनिक अध्ययन समय सारणी बनानी चाहिए।

शिक्षक को नियत कार्यों और उपस्थिति का सावधानीपूर्वक रिकॉर्ड रखना चाहिए। पाठ्यक्रम के अन्त में, रिकॉर्ड अंकों को देने के लिए आधार बनेगा। पाठ्यक्रम के दौरान, जब अलग-अलग छात्र अच्छा नहीं कर रहे हैं, तो शिक्षक को उनसे बात करनी चाहिए और उन्हें बताना चाहिए कि सुधार कैसे किया जाए।

शिक्षक के लिए यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि छात्र समझता है कि नियत कार्य कैसे करना है। खराब तरीके से किए गए कार्यों में सुधार के लिए छात्र को वापस लौटा दिया जाना चाहिए, परन्तु शिक्षक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि छात्र यह समझता है कि कार्य को कैसे सुधारा जा सकता है।

यदि छात्रों की उपस्थिति या नियत कार्य उनके अंकों को कम कर रहे हैं, तो शिक्षक को उनसे सुधार की आवश्यकता के बारे में बात करनी चाहिए। पाठ्यक्रम के अन्त में छात्रों को अपने अंकों से हैरानी नहीं होना चाहिए।

अध्याय 5
अच्छे शिक्षण की पद्धतियाँ

कक्षा की शैली को निर्धारित करना

प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरुआत में उत्साह और अपेक्षा होती है। छात्रों को ठीक-ठीक पता नहीं होता है कि क्या अपेक्षा की जाए, परन्तु वे समूह से सहायता पाने की आशा रखते हैं।

कक्षा की पहली सभा बाद की सभाओं से भिन्न हो सकती है, क्योंकि कक्षा के बारे में परिचय और व्याख्याएँ आवश्यक होती हैं। हालाँकि, पहली सभा भविष्य की सभाओं की शैली निर्धारित करेगी। उदाहरण के लिए, यदि कोई जन पहली सभा में बात नहीं करता है, तो वह व्यक्ति भविष्य में चुप रहने की अपेक्षा रखेगा। यदि कोई व्यक्ति चर्चा में हावी रहता है, तो समूह भविष्य की चर्चाओं में उसी व्यक्ति के हावी होने की अपेक्षा रखेगा। यदि सभा अव्यवस्थित है, तो वे भविष्य में भी ऐसी ही अपेक्षा रखेंगे। यदि कक्षा में छात्रों की भागीदारी कम है, तो वे उसी शैली की अपेक्षा रखेंगे।

कुछ छात्र कुछ सभाओं के बाद बाहर हो सकते हैं, क्योंकि कक्षा वैसी नहीं है जैसी उन्होंने अपेक्षा की थी। कक्षा को हर किसी को खुश करने के लिए नहीं बनाया जा सकता है, परन्तु इसे उन छात्रों को संतुष्ट करने के लिए बनाया जाना चाहिए जो सीखना चाहते हैं। कक्षा की ठीक से अगुवाई करना महत्वपूर्ण है, जिससे कि जो छात्र सही बातों की आशा कर रहे थे वे निराश न हों।

परिणामों को लक्ष्य बनाना

हमारे प्रशिक्षण का सर्वोच्च परिणाम प्रभावी सेवकाई और सुसंगत मसीही जीवन होना चाहिए। प्रभावी पास्टर, शिक्षक, प्रचारक और मिशनरी वे सर्वोच्च उत्पाद हैं, जिन्हें हम अपने कार्यक्रम से चाहते हैं।

यह जानने के लिए कि उनकी कक्षाएँ प्रभावी हैं या नहीं, शिक्षकों को तत्काल, अवलोकन किए जाने योग्य परिणामों की खोज करनी चाहिए। उन्हें अपनी कक्षाओं को जानना चाहिए और यह देखने की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए कि क्या उनके छात्र सेवा में सफल होंगे या नहीं।

► आपकी शिक्षा प्रभावी है या नहीं, यह तुरंत जानने के कुछ तरीके क्या हैं?

कक्षा पर अच्छी तरह से ध्यान देना एक शिक्षक का पहला परिणाम होना चाहिए। शिक्षकों को व्यवस्था को बनाए रखना चाहिए ताकि छात्र ध्यान दे सकें। यदि उनका ध्यान बुरा है तो शिक्षक केवल छात्रों को दोष नहीं दे सकते। शिक्षकों को कक्षा को दिलचस्प बनाना चाहिए।

कक्षा सफल हो रही है या नहीं इसके अलग संकेत भी होते हैं। संकेतों में छात्रों की चर्चा में भागीदारी, छात्रों की ओर से अच्छे प्रश्न, अच्छी उपस्थिति, नियत कार्यों को पूरा करना, और जिन बातों को वे सीख रहे हैं, उनके बारे में छात्रों का उत्साह शामिल हैं। यदि शिक्षक इन संकेतों को नहीं देख पा रहे हैं, तो उन्हें अपनी कक्षाओं की शैली में सुधार करने के उपाय खोजने चाहिए।

अच्छे शिक्षण के लिए आगे के निर्देश

1. **शिक्षा के लिए अच्छी तैयारी करें।** पाठ पढ़ाने से पहले समय लेकर यह सुनिश्चित करें कि आप पाठ की हर बात को समझते हैं। पाठ में उन बातों को खोजें जो दिये गए उद्देश्यों को पूरा करने में सहायता करती हैं। महत्वपूर्ण कथनों को रेखांकित करें और यह सोचें कि उन बातों को एक से अधिक तरीकों से कैसे समझाएँ। विचारों को समझाने की अपनी योजना को याद रखने के लिए कागज के किनारों पर नोट्स लिखें।

2. **समय का मूल्य समझें।** हर छात्र के समय का आदर करें। यद्यपि हर संस्कृति की समय की समझ अलग होती है, फिर भी छात्रों को यह सिखाएँ कि वे कक्षा के समय-सारणी का वैसा ही सम्मान करें जैसा वे कार्य की समय-सारणी का करते हैं।

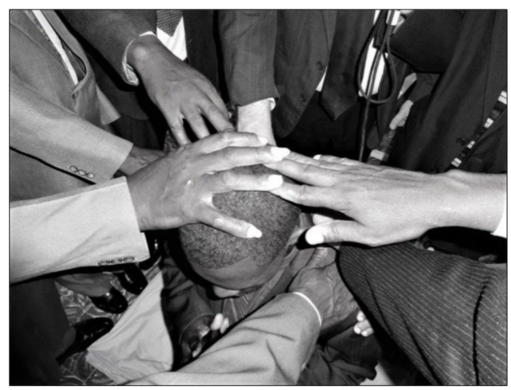

3. **कक्षा की चर्चा को सरल बनाने के लिए छात्रों की बैठक की व्यवस्था करें।** चूँकि चर्चा महत्वपूर्ण है, इसलिए बैठक की व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जिससे सभी छात्र भाग ले सकें।

4. **जब छात्र बोलते हैं तो अच्छी तरह से सुनें।** अच्छी तरह से सुनने के लक्षण आँखों का संपर्क, चेहरे के एकाग्र भाव, भटकाने वाली बातों को अनदेखा करना और वक्ता के हास्य या अन्य भावनाओं के प्रति प्रतिक्रिया देना है।

5. **यह सुनिश्चित करें कि सभी छात्र ध्यान दे रहे हैं और प्रशिक्षण में भाग ले रहे हैं।** यदि कोई छात्र असंबद्ध लगता है, तो उसे चर्चा में सम्मिलित करने के लिए प्रश्न पूछें। प्रश्न पूछते समय उसका नाम पहले लें, ताकि उसे पता चले कि यह प्रश्न उसी से किया गया है। ("पॉल, तुम इस बारे में क्या सोचते हो?") आपका उद्देश्य उसे शर्मिंदा करना नहीं, बल्कि प्रशिक्षण में सम्मिलित करना है।

6. **ऐसे प्रश्न पूछें जिनका उत्तर छात्र अपने आत्म-विश्वास को बढ़ाने के लिए दे सकते हैं।** यदि कोई गलत उत्तर देता है, तो आलोचना करने से पहले उसके बारे में कुछ अच्छा कहने का प्रयास करें।

7. **हर टिप्पणी की आलोचना करने से पहले उसकी प्रशंसा करने का प्रयास करें।** यदि उनकी भागीदारी की प्रशंसा की जाती है तो छात्रों को आत्मविश्वास बढ़ेगा।

8. **छात्रों का ध्यान बनाए रखें।** केवल अनुशासन और अधिकार के बल पर छात्रों को सुनने के लिए बाध्य न करें। कक्षा को रोचक बनाएँ—शैली बदलते रहें, प्रश्न पूछें, कहानियाँ सुनाएँ, अपने स्वर में बल बदलें, किसी समस्या को हल करने के लिए वर्णन करें, या आश्चर्यजनक तथ्य प्रस्तुत करें।

9. **एक छात्र को बहुत अधिक बात न करने दें और कि वही सभी प्रश्नों के उत्तर दें।** आप विशिष्ट छात्रों से प्रश्न पूछ सकते हैं। या आप पूछ सकते हैं, "बाकी लोग क्या सोचते हैं?" एक चर्चा में, आप कह सकते हैं कि, "आओ किसी ऐसे व्यक्ति से सुनें जिसने अभी तक इस बारे में बात नहीं की है।"

   यदि कुछ विशेष सदस्य अभी भी बहुत अधिक बात करते हैं, तो अगुवे सभा के बाद उनसे बात कर सकते हैं। एक अगुवे कुछ इस तरह कह सकता है किः "चार्ल्स, आप एक जोशीले विचारक हैं और चर्चाओं में शीघ्रता से उत्तर देने योग्य हैं, परन्तु मुझे इस बात की चिन्ता है कि यदि हम सब बातों का उत्तर शीघ्रता से दे देंगे तो कुछ अन्य लोग भाग नहीं लेंगे। क्या आप सभी को शामिल करने में मेरी सहायता कर सकते हैं?"

10. **समूह की अनदेखी करते हुए दो या तीन छात्रों को बहस न करने दें** । यदि कोई किसी बात को लेकर लम्बे समय तक बहस करना चाहता है, तो उससे कहें कि हमें उस चर्चा को बाद में खत्म करना होगा।

11. **किसी को भी दूसरों को टोकने की अनुमति न दें।** अपना हाथ उठाएँ, टोकने वाले को दृढ़ता से रोकें, और पहले बोलने वाले को समाप्त करने दें। अन्यथा, चर्चा में हमेशा कम शिष्टाचार वाले सदस्यों का ही बोलबाला रहेगा। जो लोग कम बोलने वाले होते हैं, वे इस बात से निराशा महसूस करेंगे कि वे अपने वाक्य पूरे नहीं कर पाए।

12. **शिकायतों को सुनें।** कोई भी शिकायत एक ऐसी समस्या दिखा सकती है जिसे ठीक किया जा सकता है। असंतोष के संकेतों को अनदेखा न करें। यदि कोई कक्षा से असंतुष्ट है, तो हो सकता है कि वह पुरुष या महिला उद्देश्य को न समझा हो, या उसके पास उचित शिकायत हो।

13. **टोकने वाले छात्र को सुधारें।** यदि कुछ विशेष छात्र लगातार शत्रुतापूर्ण, टोका-टाकी करने वाले, तर्क-वितर्क करने वाले कार्य करते हैं या ऊब चुके हैं, तो शायद वे कक्षा के उद्देश्य को स्वीकार नहीं करेंगे। शायद यह कक्षा वह नहीं है जिसकी उन्हें अपेक्षा थी। कक्षा के उद्देश्य को देखने में उनकी सहायता करने के लिए उनसे निजी तौर पर बात करें।

14. **यदि आप उत्तर नहीं जानते हैं तो उत्तर जानने का नाटक न करें।** शिक्षक को सब कुछ जानने की आवश्यकता नहीं है। छात्रों को यह बताना ठीक है कि आप उत्तर की खोज करेंगे।

15. **छात्रों को अपने पास्टरों की आलोचना करने की अनुमति न दें।** क्योंकि छात्र अभी सीख रहे हैं, वे अगुवों की कमियाँ देखेंगे।

16. **अपने छात्रों को जानें।** यदि आप उनकी पारिवारिक स्थिति, सेवकाई के अनुभव, शैक्षणिक पृष्ठभूमि, वर्तमान सेवकाई की स्थिति और भविष्य के लक्ष्यों को जानते हैं, तो आप अधिक प्रभावी ढंग से सिखा सकते हैं। निजी बातचीत में इन बातों को जानने का प्रयास करें।

अच्छे शिक्षण के लिए अन्य निर्देश अध्याय 6 में दिए गए हैं।

अध्याय 6
SGC पाठ्यक्रमों को कैसे सिखाएँ

कक्षा

यदि सम्भव हो तो शिक्षक को कक्षा को पहले से ही तैयार कर लेना चाहिए। छात्रों को ऐसी व्यवस्था में बैठाया जाना चाहिए जिससे वे एक-दूसरे को देख सकें। शिक्षक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि कक्षा के समय के दौरान वह प्रशिक्षण स्थान ध्यान भंग करने वाली गतिविधियों और शोर-शराबे से मुक्त हो। शिक्षक को यह सुनिश्चित करने का प्रयास करना चाहिए कि वहाँ पर बैठने की सुविधा, आरामदायक तापमान और अच्छी रोशनी हो। यदि बहुत अधिक ध्यान भटकाने वाली बातें न हों तो एक बाहरी अध्ययन क्षेत्र अच्छा हो सकता है।

कक्षा में लिखने और चित्र बनाने के लिए एक बड़ा बोर्ड होना चाहिए।

कक्षा का पहला दिन

शिक्षकों को अपना परिचय देना चाहिए, अपने परिवारों, सेवकाई के अनुभवों, वर्तमान सेवकाईयों और शैक्षणिक पृष्ठभूमि के बारे में बताना चाहिए। उन्हें अपनी उपलब्धियों की सूची को इस तरह बताने से बचना चाहिए जैसे कि वे खुद को ऊँचे स्तर वाला दिखाने का प्रयास कर रहे हों। उन्हें याद रखना चाहिए कि इस जानकारी को साझा करने का उद्देश्य छात्रों के साथ सम्बन्ध बनाना है।

छात्रों को अपना संक्षिप्त परिचय देना चाहिए। शिक्षक दिलचस्पी दिखाने और उनके साथ सम्बन्ध स्थापित करने के लिए उनसे एक या दो प्रश्न पूछकर प्रत्येक के साथ संक्षिप्त बातचीत कर सकता है।

परिचय के बाद प्रार्थना का समय रखा जा सकता है। प्रार्थना करें कि परमेश्वर छात्रों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कक्षा का उपयोग करे। शिक्षक को अपनी शिक्षा को जीवन-परिवर्तनकारी और उपयोगी बनाने के लिए परमेश्वर पर निर्भरता दिखानी चाहिए। भविष्य की कक्षा के सत्र प्रार्थना के साथ शुरू होने चाहिए और इसमें प्रार्थना की आवश्यकताओं को साझा करना शामिल हो सकता है।

शिक्षकों को छात्रों को बताना चाहिए कि उन्हें कौन सी पाठ्य-सामग्री लानी है, जिसमें बाइबल, मुद्रित पाठ्यक्रम और लेखन सामग्री शामिल हों। शिक्षकों को इस बात पर जोर देना चाहिए कि छात्रों को अपने भविष्य में लाभ लेने के लिए नोट्स बनाने चाहिए, न कि परीक्षा उद्देश्यों के लिए। (सारी परीक्षा सामग्रियाँ पाठ्यक्रम पाठ में दी गई है।)

परिचय के बाद, पहले दिन की कक्षा का समय उस शैली का होना चाहिए जो भविष्य में कक्षा में अपनाई जाएगी, ताकि छात्रों को पता चले कि क्या अपेक्षा रखनी है।

पाठ संरचना

SGC पाठ्यक्रम केवल पुस्तकें नहीं हैं; वे शिक्षण के लिए बनाए गए पाठ्यक्रम हैं। प्रत्येक पाठ्यक्रम में मुख पृष्ठ के पास शिक्षक के लिए निर्देश दिए गए हैं। सभी पाठ्यक्रम एक दूसरे के समान हैं, परन्तु संरचना में बिल्कुल भी समान नहीं हैं।

कुछ पाठ्यक्रमों के पाठ, पाठ के उद्देश्यों से शुरू होते हैं। शिक्षक का उन्हें कक्षा में पढ़कर सुनाना आवश्यक नहीं है।

कई पाठ एक प्रश्न या कहानी या दिलचस्पी बढ़ाने की किसी अन्य तकनीक से शुरू होते हैं और छात्र को यह महसूस कराते हैं कि विषय कितना महत्वपूर्ण है।

शिक्षक पाठ को पृष्ठ-दर-पृष्ठ पढ़ा सकते हैं और सामग्री के अनुच्छेदों की व्याख्या कर सकते हैं। उन्हें पहले से तैयारी करनी चाहिए—इस बात को सुनिश्चित करके कि वे स्वयं सामग्री को समझते हैं, और प्रत्येक अनुच्छेद को समझाने में सहायता के लिए मुख्य वाक्यांशों को रेखांकित करके।

पूरे पाठ में चर्चा प्रश्न दिए गए हैं। कभी-कभी एक प्रश्न आगे आने वाली पाठ्य-सामग्री का परिचय देता है। अन्य मौक़ों पर, प्रश्न छात्रों से किसी ऐसी बात का उत्तर देने के लिए कहता है जिसका उन्होंने अभी-अभी अध्ययन किया है। प्रश्न "हाँ" या "नहीं" में उत्तर की नहीं, बल्कि व्याख्या की माँग करते हैं। शिक्षक को कई छात्रों को उत्तर देने का अवसर देना चाहिए। चर्चा के लिए हर बार एक निश्चित निष्कर्ष पर आना जरूरी नहीं है, खासकर जब प्रश्न आगे की पाठ्य-सामग्री को प्रस्तुत कर रहा हो।

शिक्षकों को खुद के लिए अतिरिक्त चर्चा प्रश्न सम्मिलित करने की आवश्यकता पड़ेगी। किसी भी समय शिक्षकों को जब यह एहसास होता है कि वे कई मिनटों से बात कर रहे हैं और छात्रों से कोई बातचीत नहीं हुई है, तब उन्हें छात्रों से कोई प्रश्न पूछना चाहिए।

चर्चाओं में समय को बर्बाद होने से बचाना हमेशा एक चुनौती होती है। हालाँकि, अधिकतर लोग बिना चर्चा के अच्छी तरह से नहीं सीखते हैं। छात्रों को सोचने और दूसरों की बात सुनने के लिए समय चाहिए जिससे पता चले ये सिद्धान्त उनकी संस्कृतियों और कलीसिया स्थितियों पर कैसे लागू होते हैं।

अधिकतर पाठ नियत कार्यों के साथ समाप्त होते हैं। शिक्षक को नियत कार्य की व्याख्या करनी चाहिए। यदि कक्षा के दिन में कई पाठ शामिल हैं, तो शिक्षक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि छात्र अगली कक्षा में होने वाले सभी नियत कार्य को समझ लें।

बाद की कक्षा के दिन

पहले दिन के बाद कक्षा के अन्य दिनों में नियत कार्य देने होंगे। शिक्षक को कक्षा की शुरुआत में नियत कार्य ले लेने चाहिए। कुछ छात्रों की प्रस्तुतियाँ शुरुआत में और अन्य बाद में कक्षा के समय में कुछ विविधता प्रदान करने के लिए दिन के दौरान दी जा सकती हैं।

जब कोई परीक्षा हो या याद से कुछ लिखा जाना हो, तो यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि छात्र बैठे हों ताकि वे यह आसानी से यह न देख पाएँ कि अन्य छात्र क्या लिख रहे हैं।

ठहराई गई छात्र प्रस्तुतियों के अलावा, शिक्षक को अक्सर छात्र को पाठ्यक्रम के एक खण्ड से पाठ्य-सामग्री प्रस्तुत करने के लिए कहना चाहिए। इसे समय से पहले व्यवस्थित किया जाना चाहिए ताकि छात्र तैयारी कर सकें।

SGC पाठ्यक्रम को पढ़ाने के सुझाव

पाठ की तैयारी करें

1. पाठ को पूरी तरह से पढ़ें।
2. परीक्षा को पढ़ें ताकि यह जान सकें कि किन बातों पर ज़ोर देना है।
   पाठ में वह बात रेखांकित करें जो परीक्षा में पूछी गई है।
3. अन्य महत्वपूर्ण बातों को चिह्नित करें जिन्हें आप चाहते हैं कि छात्र सीखें।

   उदाहरण के लिए, किसी मुख्य अनुच्छेद को घेरें या उसके पास एक तारा बनाएँ। यह तय करने के लिए पाठ के उद्देश्यों का उपयोग करें कि सबसे महत्वपूर्ण बात क्या है।
4. पाठ की शुरुआत किसी प्रश्न या कहानी से करें जो छात्रों की रुचि को पाठ में बढ़ाए।
5. पाठ के दौरान पूछने के लिए 2–4 खुले-प्रश्न तैयार करें।

   छात्रों को शामिल बनाए रखने के लिए प्रश्नों को पाठ में अलग-अलग स्थानों पर पूछें। उदाहरण के लिए, पाठ की शुरुआत में एक प्रश्न पूछें और दूसरा प्रश्न पाठ के मध्य में पूछें।

   चर्चा को बढ़ावा देने के लिए प्रश्न खुले होने चाहिए, बंद नहीं। उदाहरण के लिए, "यशायाह के बारे में तुम क्या जानते हो?" एक खुला प्रश्न है क्योंकि इसके कई सही उत्तर हो सकते हैं और इसका उत्तर देना आसान है। "यशायाह कौन से वर्षों में जीवित था?" एक बंद प्रश्न है क्योंकि इसका केवल एक ही सही उत्तर है।

पाठ प्रस्तुत करें

1. पाठ्यपुस्तक की सामग्री पर केंद्रित रहें।

सिर्फ़ पाठ्यपुस्तक को न पढ़ें, परन्तु जो कुछ आप कहें उसका अधिकांश भाग पुस्तक से ही आना चाहिए। छात्रों को यह देखना चाहिए कि आप जो सिखा रहे हैं वह पुस्तक से है ताकि वे स्वयं भी इसे सिखा सकें।

यदि आप कोई बात कहते हैं जो पुस्तक में नहीं है, तो उसे संक्षेप में रखें।

2. यदि छात्र आपको नहीं समझते, तो वही बात अलग शब्दों में दोहराएँ।

   उदाहरण के लिए, यदि कोई छात्र यह नहीं समझता जब आप कहते हैं, "हम मसीह में विश्वास द्वारा धर्मी ठहराए जाते हैं," तो आप कह सकते हैं, "जब हम यीशु पर विश्वास करते हैं तो परमेश्वर हमें धर्मी मानता है," या "उद्धार परमेश्वर का एक वरदान है जो विश्वास द्वारा प्राप्त होता है।"

3. पाठ के दौरान छात्र का ध्यान बनाए रखने के लिए कुछ कार्य करते रहें।

   उदाहरण के लिए, कोई प्रश्न पूछें या किसी छात्र से कहें कि वह कोई बाइबल पद या पाठ का कोई अनुच्छेद पढ़े।

पाठ समाप्त करें

1. सबसे महत्वपूर्ण बातों की पुनरावृत्ति करें।

   उदाहरण के लिए, "आज हमने सीखा..." या "सारांश में..."

2. सभी असाइनमेंट्स को समझाएँ, यह सुनिश्चित करें कि छात्र निर्देशों को समझते हैं।

3. छात्रों को याद दिलाएँ कि अगली कक्षा की तैयारी के लिए अगला पाठ पढ़ें।

पाठ पर मनन करें

अपने आप से पूछें:

1. मैंने क्या अच्छा किया?
2. अगली बार मुझे क्या अलग करना चाहिए?
3. मैंने आज शिक्षा के बारे में क्या सीखा?
4. क्या मैंने पाठ के उद्देश्यों को पूरा किया?

अध्याय 7
शिक्षकों की खोज करना

इस अध्याय का उपयोग करने के तीन तरीके

1. **एक प्रशिक्षक स्थानीय शिक्षकों को विकसित करने के लिए इस अध्याय में पद्धतियों का उपयोग कर सकता है।** यदि किसी स्थानीय कलीसिया में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जो खुद को सिखाने योग्य महसूस करता है, तो एक प्रशिक्षक किसी स्थानीय कार्यक्रम शुरू नहीं कर सकता है, जो तत्काल स्वतंत्र रूप से संचालित होता है। प्रशिक्षक को सम्भावित शिक्षकों की खोज और विकास करना चाहिए। यह अध्याय प्रशिक्षक को बताता है कि स्थानीय शिक्षकों से शुरुआत कैसे करवाई जाए।

2. **प्रशिक्षक स्थानीय शिक्षकों को अपने छात्रों के लिए इस पद्धति का उपयोग करने के लिए तैयार करता है।** यदि नया प्रशिक्षण स्थान के स्थानीय शिक्षक पहले से ही सिखाने योग्य हैं, तो प्रशिक्षक को इस अध्याय के अभ्यासों का उपयोग करने की आवश्यकता नहीं है। प्रशिक्षक को स्थानीय शिक्षकों को वह पद्धति सिखानी चाहिए ताकि वे अपने छात्रों को विकसित करने के लिए अभ्यासों का उपयोग कर सकें।

3. **एक स्थानीय शिक्षक छात्रों को विकसित करता है।** प्रत्येक शिक्षक को छात्रों के सेवकाई कौशल को विकसित करने का प्रयास करना चाहिए। इस अध्याय में वर्णित पद्धतियाँ छात्रों की समूहों के सामने बोलना शुरू करने में सहायता करने के लिए उपयोगी होंगी।

शिक्षकों की खोज की आवश्यकता

कई बार जब SGC के प्रतिनिधि कलीसियाओं में जाते हैं तो वहाँ वे ऐसे लोगों को पाते हैं जो पाठ्यक्रमों को सिखाना शुरू करने के लिए उसी समय तैयार होते हैं। आमतौर पर, ये सम्भावित शिक्षक ऐसे लोग होते हैं, जिनके पास कुछ शैक्षणिक प्रशिक्षण और शिक्षण अनुभव होता है। वे पाठ्यक्रमों को देखते हैं और उन्हें लगता है कि उन्हें पढ़ाना आसान है। दिशानिर्देश प्रत्येक पाठ्यक्रम के मुखपृष्ठ पर मुद्रित होते हैं। चर्चा प्रश्न प्रदान किए जाते हैं। पाठ्यक्रम केवल पुस्तकें नहीं हैं; वे जैसे हैं उन्हें वैसे ही सिखाया जा सकता है।

पाठ्यक्रम इस तरह से बनाए गए हैं कि पढ़ने का कौशल, बाइबल ज्ञान और शिक्षण क्षमता रखने वाला कोई भी व्यक्ति शीघ्रता से से उनका उपयोग करना सीख सकता है। हालाँकि, कभी-कभी जिन लोगों के पास अधिक शैक्षणिक प्रशिक्षण नहीं होता है, उन्हें लगता है कि वे सिखाने योग्य नहीं हैं। उन्हें लगता है कि केवल एक उच्च प्रशिक्षित व्यक्ति ही सिखा सकता है।

परमेश्वर ने बहुत से लोगों को सिखाने की योग्यता दी है जिन्हें किसी विश्वविद्यालय में पढ़ने का अवसर नहीं मिला है। क्योंकि कलीसिया के लिए शिक्षक आवश्यक हैं, इसलिए हम इस बात को लेकर आश्वस्त हो सकते हैं कि जहाँ कहीं भी कलीसिया मौजूद है, परमेश्वर वहीं पर सामान्य रूप से लोगों को सिखाने की योग्यता क्षमता प्रदान करता है (इफिसियों 4:11-12)।

बहुत से लोग यह नहीं समझते कि उन्होंने अपने सामान्य जीवन में पहले ही शिक्षण कौशल विकसित कर लिया है। वे घर और काम पर बातों को समझाते हैं। वे लोगों की समस्याओं को हल करने में सहायता करते हैं। बातों को समझाने योग्य होने के कारण उनकी प्रतिष्ठा होती है। जब वे स्कूल में छात्र थे तब वे पढ़ने-समझने और समझाने में दक्ष हुआ करते थे। तब वे नहीं जानते थे कि उनमें सिखाने की क्षमता है।

एक प्रशिक्षक को निर्देशित वक्तव्य देने के अनुभवों के द्वारा सम्भावित शिक्षकों की सहायता करनी चाहिए ताकि वे अपनी-अपनी क्षमता का पता लगा सकें। अनुभव के द्वारा, किसी व्यक्ति को समूहों से बात करने का आत्मविश्वास मिलता है।

वक्तव्य देने का अनुभव का निर्माण के तरीके

1. **आसान विषयों पर वक्तव्य देने के नियत कार्य दें।** भाषण की लम्बाई कुछ ही मिनटों की हो सकती है। यदि छात्र वक्तव्य के लिए समूह के सामने खड़े होने से घबराते हैं, तो वे अपनी कुर्सियों पर बैठे-बैठे ही अपना पहला भाषण दे सकते हैं।

   आसान वक्तव्य वाले नियत कार्य के उदाहरण:

   - अपने बचपन की किसी चुनौती के बारे में बताएँ।
   - किसी ऐसे रिश्तेदार के बारे में बताएँ जो आपके लिए महत्वपूर्ण था।
   - किसी अन्य छात्र से कुछ प्रश्न पूछें और फिर उस छात्र का परिचय समूह से कराएँ।
   - ऐसी कौन सी जगह है जहाँ आप जाना चाहेंगे? क्यों?
   - पवित्रशास्त्र की अपनी पसंदीदा आयतों में से एक के बारे में बताएँ।
   - अपने कार्यस्थल पर किसी साधारण दिन के बारे में बताएँ।
   - हाल ही में आपके द्वारा सुने गए किसी उपदेश से आपको क्या याद आता है?

2. **कक्षा में किसी व्यक्ति से सीधे प्रश्न करें।** प्रश्न में थोड़ी व्याख्या की आवश्यकता होनी चाहिए, केवल एक संक्षिप्त उत्तर नहीं। प्रश्न कुछ ऐसा होना चाहिए कि जिसका उत्तर व्यक्ति दे सके, ताकि वह अधिक दृढ़ हो जाए और लज्जित न हो।

3. **छात्रों को उनके लेखन नियत कार्यों को समूह को समझाने के लिए कहें।** पाठ्यक्रमों में विभिन्न लेखन नियत कार्यों की आवश्यकता पड़ती है। यहाँ तक कि यदि प्रशिक्षक केवल एक दिन के लिए वहाँ है, तो

छात्रों को किसी एक नियत कार्य को लिखने और उसे प्रस्तुत करने के लिए कुछ समय दिया जा सकता है।

4. **शिक्षण के अभ्यास के लिए तीन-तीन के समूहों में विभाजित करें।** प्रत्येक व्यक्ति से समूह को एक छोटा खण्ड सिखाने के लिए कहें। इससे उन्हें छोटा दर्शक समूह मिलता और कई छात्रों को एक ही समय में अभ्यास करने का अवसर मिलता है।

5. **किसी छात्र से किसी पाठ की पाठ्य-सामग्री के किसी भाग को समझाने के लिए कहें।** पाठ्यक्रमों के कई खंडों में केवल कुछ ही अनुच्छेद होते हैं, जो एक अवधारणा की व्याख्या करते हैं। किसी छात्र को समय से पहले कुछ मिनटों में किसी अनुभाग को समझाने के लिए तैयार रहने के लिए कहें।

6. **एक उन्नत शिक्षा वाले छात्र से किसी एक पाठ्यक्रम से सबक सिखाने के लिए कहें।** एक छात्र के लिए सबसे आसान व्यवस्था वह पाठ सिखाना है जिसे उसने किसी और को सिखाते हुए सुना है। छात्र तब उच्च स्तर की क्षमता का प्रदर्शन करता है जब वह एक ऐसा पाठ तैयार करता है और सिखाता है जो उसे किसी ने नहीं सिखाया है। प्रशिक्षक को लग सकता है कि उसे जितना सम्भव हो उतना सिखाना चाहिए, और शायद कक्षा को प्रशिक्षक को सुनना अच्छा लगता है, परन्तु लक्ष्य दूसरों को सिखाने के लिए तैयार करना है।

7. **"मेज वार्ता" वाली पद्धति का प्रयोग करें।** छात्र मुद्रित पाठ्यक्रमों सहित एक मेज के इर्दगिर्द बैठते हैं। मेज पर कोई शिक्षक नहीं होता है। विभिन्न छात्र पाठ की किसी बात के बारे में बारी-बारी से बात करते हैं। मेज पर बैठे किसी एक व्यक्ति को नियुक्त किया जाता है कि वह अगुवाई करे और विभिन्न छात्रों से उनके विचार पूछने के द्वारा चर्चा को जारी रखे। वह अगुवा शिक्षक नहीं है। समूह को पता चलेगा कि वे शिक्षक के बिना चर्चा के द्वारा कार्य कर सकते हैं और सीख सकते हैं। यह पद्धति उन जगहों पर अध्ययन समूहों के निर्माण के योग्य बनाती है जहाँ एक ऐसे व्यक्ति की कमी होती है जो सिखाने योग्य महसूस करता है।

उपसंहार

SGC का दर्शन हर प्रशिक्षण स्थान पर सेवकाई के प्रशिक्षण को स्थानीय बनाना है। हर प्रशिक्षण स्थान पर ऐसे लोगों के द्वारा प्रशिक्षण दिया सकता है, जिन्हें परमेश्वर ने योग्यता और बाइबल की समझ के वरदान दिए हैं। शिक्षकों को याद रखना चाहिए कि उनका उद्देश्य केवल ज्ञान देना ही नहीं है बल्कि छात्रों को दूसरों को सच्चाई बताने के लिए तैयार करना है।

अध्याय 8
एक स्थानीय संस्थान का संचालन

परिचय

SGC के पाठ्यक्रम विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों में उपयोग किए जाते हैं। कुछ उच्च विद्यालय (जिन्हें कई बार माध्यमिक विद्यालय कहा जाता है) कुछ निश्चित पाठ्यक्रमों का उपयोग करते हैं। कुछ कलीसियाएँ अपने संडे स्कूलों में पाठ्यक्रमों का उपयोग करती हैं। गृह बाइबल अध्ययन समूह अध्ययन के लिए पाठ्यक्रम का चुनाव करते हैं। पास्टर प्रचार और शिक्षण में उपयोग करने के लिए पाठ्यक्रमों से पाठ्य-सामग्री का चयन करते हैं।

इस अध्याय के निर्देश किसी स्थानीय संस्थान के संचालन पर लागू होते हैं जो अध्ययन के पूर्ण कार्यक्रम के लिए 20 SGC पाठ्यक्रमों का उपयोग करता है।

शैक्षणिक स्तर

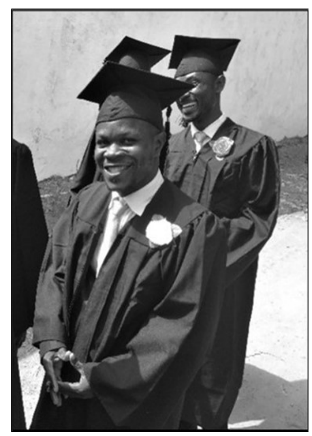

SGC पाठ्यक्रमों के पूर्ण समूह में बाइबल कॉलेज पाठ्यक्रम की सबसे महत्वपूर्ण पाठ्य-सामग्री शामिल है। इसे सोच-समझकर कर बिना कठिन शब्दावली के लिखा गया है।

एक छात्र को पाठ्यक्रमों का अध्ययन करने के लिए अच्छी तरह से पढ़ने और लिखने के योग्य होना चाहिए क्योंकि वे इसी तरह से बनाए गए हैं।

पाठ्यक्रम नए विश्वासियों के शिष्यत्व के लिए नहीं बनाए गए हैं, हालाँकि अधिकतर पाठ्य-सामग्री उस उद्देश्य के लिए उपयोगी है।

समूह के लिए सर्वोत्तम अभ्यास प्रत्येक छात्र के लिए हैं

1. पाठ्यक्रम की एक प्रति को अपने पास रखें
2. सभी नियत कार्यों को पूरा करें
3. कक्षा सत्रों के दौरान सामग्री प्रस्तुत करने का अभ्यास करें।
4. स्थानीय कलीसिया के साथ अच्छे सम्बन्ध में रहें
5. समूह के बाहर नियमित रूप से सेवकाई करें।

एक ऐसा शिक्षक जो इन अभ्यासों को बनाए रखता है, वह सेवकाई के लिए छात्रों को प्रभावी रूप से प्रशिक्षित करेगा।

छात्र संस्करण सामग्री उन छात्रों के समूहों के लिए उपलब्ध हैं, जो सेवकाई की तैयारी नहीं कर रहे हैं। छात्र संस्करण सामग्री पाठ्यक्रमों के संक्षिप्त संस्करण हैं। उनका उपयोग उच्च विद्यालय (माध्यमिक विद्यालय) और रविवार के स्कूलों में किया जाता है। वे छात्र सामान्य कार्य नहीं करते हैं, क्योंकि वे सेवकाई का अभ्यास नहीं कर रहे हैं या सेवकाई की तैयारी नहीं कर रहे हैं। इन छात्रों के शिक्षकों को मूल SGC पाठ्यक्रम पाठ से सिखाना चाहिए क्योंकि छात्र संस्करण सामग्री अधूरी है। नोटः छात्र संस्करणों का उपयोग उन छात्रों के लिए नहीं किया जाना चाहिए जो सेवकाई की तैयारी कर रहे हैं और सेवकाई प्रशिक्षण का प्रमाण पत्र प्राप्त करने की योजना बना रहे हैं।

SGC शैक्षणिक डिग्री नहीं देता है। कुछ जगहों पर ऐसे स्थानीय या राष्ट्रीय संस्थान जो SGC पाठ्यक्रमों का उपयोग करते हैं, और अपनी आवश्यकताओं के आधार पर डिग्री या प्रमाण पत्र देते हैं। छात्र को संस्था के साथ पंजीकरण कराना होगा और उनकी आवश्यकताओं को पूरा करना होगा।

जिन स्थानों पर शैक्षणिक डिग्री उपलब्ध नहीं है, वहाँ कार्यक्रम को पेशेवर प्रशिक्षण माना जाना चाहिए। व्यवसायिक संसार में पेशेवर प्रशिक्षण कार्यक्रम एक व्यक्ति को एक कुशल व्यवसाय में काम करने के लिए तैयार करते हैं। वे कार्यक्रम डिग्री प्रदान नहीं करते हैं, परन्तु वे प्रमाणित करते हैं कि व्यक्ति को प्रशिक्षण दिया गया है। इसी तरह, SGC कार्यक्रम सेवकाई का पेशेवर प्रशिक्षण है।

आवश्यक सामग्रियाँ

पाठ्यक्रमों के अतिरिक्त केवल एक बाइबल आवश्यक है, परन्तु पाठ्यक्रम आगे के अध्ययन के लिए पाठ्य-सामग्रियों की सलाह देते हैं। किसी स्थानीय संस्थान को छात्रों के उपयोग के लिए एक पुस्तकालय बनाने का प्रयास करना चाहिए।

कक्षा समय सारणी

स्थानीय परिस्थितियों के आधार पर एक स्थानीय संस्थान कक्षाओं के लिए अपनी निजी समय सारणी बना सकता है। हालाँकि, पर्याप्त समय समर्पित किया जाना चाहिए। यदि एक शिक्षक बिना चर्चा और छात्र अभ्यास के केवल पाठ्य-सामग्री पढ़ाता है, तो समय कम लगेगा, परन्तु कक्षा से छात्र अच्छी तरह से तैयार नहीं हो पाएँगे। यदि समूह पाठ्य-सामग्री और पूर्ण किए गए नियत कार्यों पर चर्चा करने में समय व्यतीत करता है, तो एक पाठ्यक्रम में तीस घंटे से अधिक का कक्षा समय लगेगा। छात्रों को नियत कार्य करने में कक्षा के बाहर अतिरिक्त समय देना चाहिए।

पाठ्यक्रमों का क्रम

एक निश्चित क्रम आवश्यक नहीं है। प्रत्येक कोर्स पूर्ण है और उससे पहले के किसी अन्य कोर्स पर निर्भर नहीं है। कार्यक्रम को एक चक्र में चलाना सम्भव है, जिससे नए छात्रों को किसी भी पाठ्यक्रम की शुरुआत में शामिल होने

का अवसर मिलता है। एक संस्थान नए छात्रों को वर्ष की शुरुआत तक प्रतीक्षा करने के बजाय लगातार भर्ती कर सकता है। अकेले छात्र किसी भी पाठ्यक्रम की शुरुआत में नामांकन करते हैं और चक्र में तब तक बने रहते हैं जब तक कि वे सभी पाठ्यक्रम समाप्त नहीं कर लेते।

गुणवत्ता नियंत्रण

शिक्षक को छात्रों की उपस्थिति का रिकॉर्ड रखना चाहिए। एक छात्र जो कक्षा में कम से कम 75% समय नहीं आता है और आवश्यक कार्य को 100% नहीं पूरा करता है, तो उसे पाठ्यक्रम के अंक नहीं मिलने चाहिए। विशेष परिस्थितियों में, शिक्षक कक्षा के छूटे हुए समय की भरपाई के लिए अतिरिक्त अध्ययन आवश्यकताएँ प्रदान कर सकता है।

यह सुनिश्चित करने के लिए की अन्तिम अँक निष्पक्ष और सटीक हैं, शिक्षक को छात्रों द्वारा पूर्ण किए गए नियत कार्यों का सावधानीपूर्वक रिकॉर्ड रखना चाहिए। शिक्षक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि अकेले छात्रों को पता चले कि क्या उनके नियत कार्य या उपस्थिति उनके अंकों को कम कर रहे हैं।

यदि स्थानीय संस्थान संस्थानों के एक संघ का हिस्सा है, तो क्षेत्रीय प्रशिक्षकों के निरीक्षण के लिए उपस्थिति और नियत कार्य के रिकॉर्ड उपलब्ध होने चाहिए। यदि संस्थान लगातार आवश्यकताओं को बनाए नहीं रखता है तो एक प्रमाण पत्र का मूल्य नहीं होगा।

स्थानीय आर्थिक सहयोग

प्रत्येक स्थानीय संस्थान स्थान का स्थानीय रूप से सहयोग किया जाना चाहिए। कक्षा एक स्थानीय कलीसिया द्वारा प्रदान की जाती है। शिक्षक स्थानीय सेवकाई के हिस्से के रूप में कार्य करते हैं। मुद्रित पाठ्यक्रमों की लागत स्थानीय सेवकाई या छात्रों द्वारा वहन की जाती है। यदि कोई संस्थान संस्थानों के संघ का हिस्सा है, तो केंद्रीय प्रशासन छात्रों के लिए एक शुल्क निर्धारित कर सकता है जिसमें मुद्रित पाठ्यक्रमों की लागत शामिल होती है और इसे स्थानीय संस्थान के कर्मचारियों को आर्थिक सहयोग मिलता है।

स्थानीय संस्थान के कर्मचारियों का सभी आर्थिक मामलों में ईमानदार और पारदर्शी होना आवश्यक है (2 कुरिन्थियों 8:21)। इसमें शामिल सभी लोगों को पता होना चाहिए कि कितना पैसा इकट्ठा किया गया है और इसे कैसे खर्च किया जाता है। कोष के प्रबन्धन के लिए एक समिति को शामिल किया जाना चाहिए। आर्थिक मामलों के उदाहरणों में छात्रों द्वारा स्थानीय संस्थान या केंद्रीय प्रशासन को भुगतान किए जाने वाले शुल्क, मुद्रित पाठ्यक्रमों की लागत, स्थानीय शिक्षकों का सहयोग, और एकत्र या खर्च किया गया अन्य तरह का धन शामिल होता है।

क्योंकि ईमानदारी मसीही चरित्र का एक मूल तत्व है, एक बेईमान व्यक्ति के लिए एक अच्छा मसीही आदर्श बन पाना सम्भव नहीं है। एक बेईमान व्यक्ति को सेवकाई के किसी पद पर नहीं होना चाहिए। बेईमानी की कोई भी घटना किसी अगुवे के SGC से सम्बन्ध को प्रभावित करेगी।

नया प्रशिक्षण कार्यक्रम स्थापित करना

यह अनुभाग एक स्थानीय सेवकाई दल की सहायता के लिए बनाया गया है जब वे एक नया प्रशिक्षण कार्यक्रम स्थापित कर रहे हों। यह कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं की योजना बनाने के लिए एक क्रम प्रदान करता है। स्थानीय सेवकाई दल को प्रत्येक प्रश्न पर चर्चा करनी चाहिए और अपने उत्तरों को लिखित रूप में रिकॉर्ड करना चाहिए।

1. उत्तरदायी सेवकाई की पहचान

► प्रशिक्षण कार्यक्रम कौन प्रारंभ कर रहा है? (क्या कोई मौजूदा संस्थान? कोई कलीसिया संघ? कोई स्थानीय कलीसिया? कई कलीसियाओं या पास्टरों की साझेदारी?)

► क्या इस कार्यक्रम को शुरू करने की ज़िम्मेदारी में दूसरों को भी आमंत्रित किया जाना चाहिए?

2. मिशन और लक्ष्य

एक मिशन वक्तव्य उद्देश्य को स्पष्ट करता है। मिशन वक्तव्य का एक उदाहरण: "हमारा उद्देश्य बाइबिल सिद्धांत और सेवकाई विधियों के साथ मसीही अगुवों को प्रशिक्षित करना है।"

लक्ष्य में मापनीय विवरण होते हैं। सेवकाई लक्ष्य का एक उदाहरण: "हमारा लक्ष्य अगले पाँच वर्षों में इरकुत्स्क क्षेत्र में 20 नई कलीसियाएँ शुरू करने के लिए कलीसिया आरंभकर्ताओं को प्रशिक्षित करना है।"

► नए प्रशिक्षण कार्यक्रम का मिशन वक्तव्य क्या है?

► नए प्रशिक्षण कार्यक्रम का लक्ष्य क्या है?

3. प्रशिक्षण कार्यक्रम का नाम

यदि नया प्रशिक्षण कार्यक्रम किसी मौजूदा संस्थान या स्थानीय प्रशिक्षण केंद्रों के नेटवर्क का भाग नहीं है, तो स्थानीय सेवकाई उसके लिए एक नाम चुन सकती है। ऐसा नाम चुनें जो आपके स्थानीय संदर्भ में समझ में आए। (SGC यह चाहता है कि स्थानीय सेवकाई Shepherds Global Classroom नाम का उपयोग न करें।)

► नए प्रशिक्षण कार्यक्रम का नाम क्या है?

4. भवन

► कक्षाएँ कहाँ आयोजित होंगी? क्या कोई कार्यालय होगा? (क्या कोई स्थानीय कलीसिया या अन्य भवन बिना लागत के उपयोग किया जा सकता है? क्या कक्षा में पर्याप्त स्थान और सुविधा होगी और क्या वह ध्यान भटकाव से मुक्त होगी?)

5. मुद्रित पाठ्यक्रम

► हम छात्रों को मुद्रित पाठ्यक्रम कैसे प्रदान करेंगे? (क्या हम उन्हें अपनी स्वयं की मशीनों पर छापेंगे, किसी स्थानीय व्यवसाय में छपवाएँगे, या किसी अन्य प्रशिक्षण कार्यालय से खरीदेंगे?)

► लागत क्या होगी?

► हम लागत को पूरा करने की क्या योजना बना रहे हैं?

► क्या छात्र मुद्रित प्रति के स्थान पर मोबाइल उपकरणों पर डिजिटल पाठ्यक्रमों का उपयोग करने में सक्षम और इच्छुक हैं?

6. समय सारणी

कक्षाओं के लिए एक विशेष समय सारणी तय करें। उदाहरण:

- छात्र प्रत्येक मंगलवार और गुरुवार की शाम 7 से 9 बजे तक मिलेंगे।
- हम दो महीनों में एक पाठ्यक्रम पूरा करने की योजना बना रहे हैं।
- पहली कक्षा 3 जून को शुरू होगी और 29 जुलाई को समाप्त होगी।
- नए छात्र प्रत्येक नए पाठ्यक्रम की शुरुआत में शामिल हो सकते हैं।

► कक्षाएँ किन दिनों और किन समयों पर मिलेंगी?

► प्रत्येक पाठ्यक्रम के लिए हम कितना समय निर्धारित करेंगे?

► हम कब शुरू करेंगे?

► नए छात्र किस समय में शामिल हो सकते हैं?

7. शिक्षक

शिक्षकों को SGC मैनुअल से परिचित होना चाहिए। वे विश्वसनीय होने चाहिए और शिक्षण के लिए तैयारी करने का समय देने के इच्छुक होने चाहिए। अच्छा आत्मिक चरित्र और मसीही उदाहरण अनिवार्य है। यदि किसी शिक्षक को

किसी संस्थान से प्रशिक्षण मिला हो, तो यह अच्छा है, पर यह हमेशा आवश्यक नहीं है। शिक्षकों की अपने वर्तमान सेवकाई में अच्छी प्रतिष्ठा होनी चाहिए।

► हम शिक्षकों से क्या योग्यताएँ अपेक्षित करते हैं?

► कौन उपलब्ध और शुरुआत करने के लिए इच्छुक है?

8. प्रशासन

पदों के उदाहरण:

- निदेशक
- रजिस्ट्रार / सचिव
- कोषाध्यक्ष

► प्रशिक्षण का निर्देशन कौन करेगा?

► और कौन-कौन कर्मचारी आवश्यक हैं?

► संभावित छात्रों की कॉल कौन प्राप्त करेगा?

► प्रत्येक पद के लिए कार्य विवरण क्या है?

9. प्रमाण पत्र

यदि आप अपने स्थानीय सेवकाई से छात्रों को प्रमाण पत्र देना चाहते हैं, तो आप अपनी आवश्यकताएँ निर्धारित कर सकते हैं। यदि आप SGC से प्रमाण पत्र देना चाहते हैं, तो आपको SGC प्रतिनिधि से संपर्क करना होगा, जो आपके प्रशिक्षण कार्यक्रम की गुणवत्ता की पुष्टि करता है और आपको SGC प्रमाण पत्र देने की अनुमति देता है।

प्रमाण पत्र योजना का उदाहरण: छात्रों को हर पूर्ण किए गए पाठ्यक्रम के लिए स्थानीय सेवकाई से प्रमाण पत्र मिलेगा। जो छात्र 10 पाठ्यक्रम पूरे करेंगे, उनके लिए स्नातक समारोह होगा और उन्हें SGC से प्रमाण पत्र प्राप्त होगा। छात्र यदि चाहें तो आगे के 10 पाठ्यक्रम पूरे करके एक उन्नत प्रमाण पत्र प्राप्त कर सकते हैं।

► हमारे स्नातक कौन-कौन से प्रमाण पत्र प्राप्त करेंगे?

► कौन प्रमाण पत्र प्रदान करेगा और कार्यक्रम के मानक निर्धारित करेगा? (कोई कलीसिया संप्रदाय? कोई स्थानीय कलीसिया समिति? SGC?)

10. छात्र नामांकन

नामांकन की आवश्यकताएँ तय करें। उदाहरण:

छात्रों को:

- स्थानीय पास्टर की अनुशंसा प्राप्त होनी चाहिए।
- उद्धार की व्यक्तिगत गवाही लिखित रूप में प्रस्तुत करनी चाहिए।
- छात्र प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर करना चाहिए।

► कोई व्यक्ति कार्यक्रम में नामांकन से पहले किन आवश्यकताओं को पूरा करेगा?

नामांकन की कोई भी आर्थिक जिम्मेदारियाँ तय करें। संभावित विकल्प:

- प्रत्येक मुद्रित पाठ्यक्रम के लिए छात्र $_________ भुगतान करेंगे
- शिक्षक शुल्क के रूप में छात्र $_________ भुगतान करेंगे
- स्थान शुल्क के रूप में छात्र $_________ भुगतान करेंगे
- छात्र अपने भोजन और यात्रा की लागत स्वयं उठाएँगे

► छात्रों की आर्थिक जिम्मेदारियाँ क्या हैं?

11. Shepherd प्रतिनिधि

SGC ने आपके क्षेत्र में प्रशिक्षण सेवकाई के साथ संवाद करने के लिए एक व्यक्ति नियुक्त किया है। आपकी सेवकाई को एक व्यक्ति को नामित करना चाहिए जो SGC प्रतिनिधि से संवाद करेगा। SGC प्रतिनिधि आपके स्नातकों के लिए प्रमाण पत्र की व्यवस्था करेगा।

► हमारी सेवकाई में वह कौन व्यक्ति होगा जो SGC प्रतिनिधि से संवाद करेगा?

एक मिशन संगठन/राष्ट्रीय सेवकाई और एक स्थानीय संस्थान का आपसी सहयोग

एबीसी एक ऐसी राष्ट्रीय सेवकाई का काल्पनिक नाम है जो कलीसियाओं की स्थानीय संस्थान स्थापित करने में सहायता करती है। एबीसी स्थानीय संस्थानों के लिए जिस स्थान अनुबंध का उपयोग करती है, उसे अगले पृष्ठ पर दिया गया है। एबीसी प्रतिनिधि इस अध्याय के अंतिम पृष्ठ पर सूचीबद्ध प्रश्नों का उपयोग करके नियमित रूप से स्थानीय संस्थान स्थानों का दौरा और निरीक्षण करते हैं।

नमूना स्थान अनुबंध

*एबीसी इस फॉर्म का प्रयोग **राष्ट्रीय सेवकाई** और **स्थानीय संस्थान** के बीच के सम्बन्धों को समझाने के लिए करती है।*

एबीसी का उद्देश्य कलीसिया को सेवकाई के लिए अगुवों को विकसित करने के लिए तैयार करके मसीह की देह की सेवा करना है। एक स्थानीय कलीसिया या सेवकाई संगठन को SGC पाठ्यक्रमों का उपयोग करके सेवकाई प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित करने की सिफारिश जा सकती है।की

स्थानीय सेवकाई द्वारा अपनी प्रतिबद्धताओं को पूरा नहीं करने की स्थिति में एबीसी के पास इस अनुबंध को रद्द करने का अधिकार सुरक्षित है।

एबीसी निम्नलिखित चीजें प्रदान करता है:

- 20 सेवकाई प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का एक सेट
- शिक्षकों के लिए एक प्रशिक्षण सेमिनार
- यह स्थानीय शिक्षकों को प्रोत्साहित करने और गुणवत्ता बढ़ाने के लिए प्रशासन प्रशिक्षण स्थल का दौरा करती है
- प्रत्येक पाठ्यक्रम के पूरा होने पर छात्रों के लिए प्रमाण पत्र (प्रमाणपत्र प्राप्त करने के लिए प्रत्येक छात्र के पास पाठ्यक्रम की एक व्यक्तिगत प्रति का होना आवश्यक है)
- सम्पूर्ण कार्यक्रम को पूरा करने के लिए एक प्रमाण पत्र
- सेवकाई स्थान पर एक एबीसी चिह्न लगाया जाता है

स्थानीय सेवकाई निम्नलिखित के लिए प्रतिबद्धता करती है:

- एबीसी प्रशासन के अनुमोदन से विश्वासयोग्य, सक्षम स्थानीय शिक्षकों की नियुक्ति करना
- शिक्षकों से एबीसी प्रशासन के प्रशिक्षण और निर्देशों में सहयोग करने की माँग करना
- एक ऐसी कक्षा उपलब्ध करवाना जो अच्छे अध्ययन के लिए अनुकूल हो
- स्थानीय शिक्षकों को आवश्यकतानुसार आर्थिक रूप से सहयोग देना
- प्रत्येक आवश्यक पाठ्यक्रम प्रति के लिए नामांकन शुल्क एकत्र करना और उसे एबीसी को भेजना
- एबीसी प्रशासन को छात्र की उपस्थिति और पूर्ण किए गए नियत कार्यों के रिकॉर्ड उपलब्ध करवाना
- एबीसी द्वारा दिए गए चिन्हों को लगाना। चिह्न एबीसी की संपत्ति है और इस अनुबंध के रद्द होने की स्थिति में इसे हटा दिया जाएगा।

स्थानीय सेवकाई का नाम ____

स्थानीय सेवकाई के प्रतिनिधि के हस्ताक्षर ____

एबीसी के अधिकृत प्रतिनिधि के हस्ताक्षर ____

स्थानीय संस्थान निरीक्षण के लिए प्रश्नों का नमूना

जब एबीसी के प्रतिनिधि स्थानों पर जाते हैं, तो वे मूल्यांकन और सुधार के लिए मार्गदर्शन करने के लिए निम्नलिखित प्रश्नों का उपयोग करते हैं।

1. क्या प्रशिक्षण स्थान के शिक्षकों ने SGC शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त किया है?
2. क्या शिक्षक विभिन्न प्रकार की शिक्षण पद्धतियों का उपयोग करते हैं?
3. क्या शिक्षक छात्रों को चर्चा और भागीदारी में शामिल करते हैं?
4. क्या प्रशिक्षण स्थान विकासशील सहायक शिक्षक हैं जो कक्षा में अभ्यास करते हैं?
5. क्या कक्षा अध्ययन के लिए अनुकूल है (बैठने की सीटें, रोशनीदर, विकर्षण और शोर से मुक्त)?
6. क्या प्रत्येक छात्र के पास अध्ययन किए जा रहे किसी पाठ्यक्रम की व्यक्तिगत प्रति है?
7. क्या सभी छात्र नियत कार्यों को पूरा करने के लिए पर्याप्त रूप से पढ़ने और लिखने योग्य हैं? (प्रमाणपत्र के लिए आवश्यक है)।
8. क्या कक्षा की समय सारणी नियत कार्य पूरा करने में लगने वाले समय के अलावा प्रत्येक पाठ्यक्रम के लिए तीस घंटे का कक्षा समय प्रदान करती है?
9. क्या जाँच प्रक्रियाएँ यह सुनिश्चित करती हैं कि छात्र दूसरों से या लिखित पाठ्य-सामग्री से उत्तरों की नकल नहीं कर रहे हैं?
10. क्या शिक्षक छात्रों की उपस्थिति का सटीक रिकॉर्ड रखते हैं? (एक छात्र जो कक्षा के 25% से अधिक समय से चूक जाता है, तो उसे पाठ्यक्रम के अंक नहीं मिलने चाहिए।)
11. क्या शिक्षक पूर्ण किए गए छात्र नियत कार्यों का रिकॉर्ड रखते हैं? (प्रमाण पत्र के लिए सभी नियत कार्य पूरे किए जाने चाहिए।)
12. क्या स्थानीय संस्थान स्थानीय आर्थिक सहयोग के लिए एक प्रणाली विकसित कर रहा है?
13. क्या खुलेपन और जवाबदेही के लिए स्थानीय संस्थान के धन का प्रबन्धन स्थानीय समिति द्वारा किया जाता है?

SGC की ओर से ऑनलाइन संसाधन

Shepherds Global Classroom ऐप

SGC ऐप Apple Store और Google Play दोनों में उपलब्ध है।

ऐप पर पढ़ने या डाउनलोड करने के लिए सारे पाठ्यक्रम प्रदान किए गए हैं। विभिन्न भाषाओं में अनुवाद जैसे ही समाप्त होता है उसे उपलब्ध करा दिया जाता है।

ShepherdsGlobal.org

वेबसाइट पर डाउनलोड के लिए पाठ्यक्रम और अन्य पाठ्य-सामग्रियाँ उपलब्ध करवाती है।

शिक्षक प्रशिक्षण

यह स्थानीय संस्थान पुस्तिका एक दस्तावेज़ के रूप में डाउनलोड किया जा सकता है।